हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 27 जुलाई 2025

11 नगर पालिका चेयरपर्सन ने किया नवनियुक्त डीएमसी का...

12 कलवाड़ी के ठाकुर मंदिर की मूर्ति खंडित ग्रामीणों में रोष

सीईटी परीक्षा: 599 बसों ने परीक्षार्थियों को पहुंचाया गंतव्य तक, आज भी परीक्षा की घड़ी

- प्रशासन की ओर से रोडवेज की 106 व 493 प्राइवेट बसों का किया गया था प्रबंध
- जिले से 404 बसें परीक्षार्थियों को लेकर गई परीक्षा दिलाने
- दूसरे जिलों से आए परीक्षार्थियों को केंद्र तक पहुंचाने के लिए चलाई गई 195 शटल बसें
- करीब 30 बाइकों से भी परीक्षार्थियों को केंद्र तक पहुंचाया
- रोडवेज के मुख्य निरीक्षण ने स्वयं विभाग की गाड़ी से परीक्षार्थियों को पहुंचाया परीक्षा केंद्र तक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

सीईटी परीक्षा के लिए जिला प्रशासन की ओर से कुल 599 बसों का प्रबंध किया गया था। जिसमें 106 बसें रोडवेज विभाग व 493 बसें प्राइवेट व स्कूलों की शामिल थी। इन 599 बसों में से 404 बसें जिले से परीक्षार्थियों को लेकर परीक्षा दिलाने गई। इन बसों में परीक्षार्थियों को मुफ्त में यात्रा करने की सुविधा थी। वहीं प्रशासन की ओर से बाहर से आने वाले परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचाने के लिए 195 शटल बसों व 30 बाइकों का भी प्रबंध किया गया था। जिसमें रोडवेज विभाग की 19 बसें व प्राइवेट तथा स्कूलों की 195 बसें शामिल थी।

नारनौल। बस स्टैंड पर खड़ी रोडवेज व प्राइवेट बसें। फोटो: हरिभूमि

कुल 599 बसों व 30 बाइकों का किया गया संचालन

सीईटी परीक्षा के लिए कुल 599 बसों व 30 बाइकों का संचालन किया गया। जिसमें रोडवेज की 106 बसें व स्कूलों तथा प्राइवेट 493 बसें शामिल थी। इसके अलावा 30 बाइकों से भी परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचाया गया। जिसके लिए 20 बाइकों का नारनौल व 10 बाइकों का महेंद्रगढ़ में प्रबंध किया गया था। इससे परीक्षार्थियों को केंद्र तक पहुंचने में किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं आने दी।

–ब्रह्मप्रकाश, मुख्य निरीक्षक, रोडवेज डिपो, नारनौल

परीक्षार्थियों के लिए चलाई गई 195 शटल बस

दूसरे जिलों से आए परीक्षार्थियों को केंद्र तक पहुंचाने के लिए 195 शटल बसें चलाई गई। ये शटल बसों ने दूसरे जिलों से आए परीक्षार्थियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाया। वहीं करीब 30 बाइकों से भी परीक्षार्थियों को केंद्र तक पहुंचाया गया। जिसके लिए प्रशासन की ओर से नारनौल में 20 व महेंद्रगढ़ में 10 बाइकों का प्रबंध किया गया था। इसके अलावा रोडवेज विभाग के मुख्य निरीक्षण ब्रह्मप्रकाश ने स्वयं भी विभाग की गाड़ी से परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र तक पहुंचाया। यह प्रशासन की ओर से परीक्षार्थियों के लिए विशेष व्यवस्था थी।

अटेली से भी चली बसें

बस स्टैंड अटेली में सुबह चार बजे से बसों का संचालन शुरू हो था। चार बजे से सात बजे तक बसों को रेवाड़ी व दादरी के लिए रवाना किया गया था। अटेली बस स्टैंड पर भी सुबह चार बजे परीक्षार्थी पहुंचने लग गए थे। सुबह हुई हल्की बारिश के चलते परीक्षार्थियों को थोड़ी मुश्किल का सामना जरूर करना पड़ा। इसके बाद मौसम सुहावना हो गया था। अटेली में ड्यूटी पर विभाग से अनिल भीलवाड़ा ने बताया कि रोडवेज महाप्रबंधक मनोज शर्मा ने परीक्षा के लिए रोडवेज कर्मचारियों की स्पेशल ड्यूटी लगाई है, ताकि परीक्षार्थियों को सरल व सुगम यात्रा हो सके। अटेली बस स्टैंड से शनिवार को कुल 23 बसों को रवाना किया गया। जिसमें 19 रेवाड़ी व चार दादरी के लिए गई।

महेंद्रगढ़ के दो सत्रों में 37 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की सीईटी परीक्षा

दो केंद्रों पर नहीं लगी बायोमैट्रिक हाजिरी, चार में आई दिक्कत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

- सीईटी परीक्षा में 37249 अभ्यर्थियों ने दी परीक्षा, 2808 अभ्यर्थी रहे अनुपस्थित

कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (सीईटी) की परीक्षा शनिवार को दो सत्रों में शांतिपूर्वक संपन्न हुई। कुल 37 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित इस परीक्षा में 37249 अभ्यर्थियों ने भाग लिया, जबकि 2808 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। हालांकि परीक्षा के दौरान कई केंद्रों पर तकनीकी खामियों के चलते अभ्यर्थियों को असुविधा का सामना करना पड़ा। परीक्षा केंद्रों पर सबसे बड़ी समस्या बायोमैट्रिक मशीनों में आई तकनीकी गड़बड़ियों को लेकर सामने आई। जानकारी के अनुसार छह परीक्षा केंद्रों पर बायोमैट्रिक सत्यापन के दौरान मशीनें ठीक से काम नहीं कर पाईं। दो केंद्रों पर तो एक भी अभ्यर्थी की बायोमैट्रिक जांच नहीं हो सकी, जबकि अन्य चार केंद्रों पर भी इसी तरह की समस्याएं देखी गईं। कई केंद्रों पर बायोमैट्रिक मशीनें चार्ज न होने के कारण भी जांच प्रक्रिया बाधित हुई, जिससे अभ्यर्थियों को देरी और मानसिक तनाव का सामना करना पड़ा। वहीं परीक्षा के दौरान करीब 25 अभ्यर्थियों को संदेह के आधार पर पुलिस द्वारा शाम को पूछताछ के लिए रोका गया। हालांकि जांच के बाद सभी को छोड़ दिया गया और किसी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई।

2808 अभ्यर्थी रहे अनुपस्थित

सुबह के सत्र 20037 अभ्यर्थी परीक्षा में बैठने थे। लेकिन 18565 अभ्यर्थियों ने ही परीक्षा दी तथा 1472 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। वहीं शाम के सत्र में 20037 अभ्यर्थियों को परीक्षा देनी थी। लेकिन 18684 अभ्यर्थी की परीक्षा में उपस्थित रहे तथा 1336 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे। परीक्षा के एक घंटे पहले अभ्यर्थियों को केंद्र में प्रवेश दिया गया। हालांकि कुछ विद्यार्थी जाम के कारण देरी में केंद्र में पहुंचे। लेकिन जिला प्रशासन ने जांच के बाद उन्हें भी प्रवेश दिया गया।

तीन बार तलाशी के बाद मिला अभ्यर्थियों को प्रवेश

परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर पुलिस बल तैनात किया गया था। पुलिस कर्मचारी भी एक-एक परीक्षार्थी का एडमिट कार्ड जांचकर एवं तलाशी लेकर अंदर प्रवेश करवा रहे थे। अंदर प्रवेश करते हुए प्रवेश द्वार के निकट ही मेटल डिडक्टर से जांच होने के बाद महिलाओं की परदे के पीछे तलाशी ली जा रही थी। केन्द्रों पर तीन स्थानों पर तलाशी लेने के बाद ही परीक्षार्थी केंद्र में प्रवेश दिया गया। तलाशी के दौरान परीक्षार्थी को केवल एडमिट कार्ड के अलावा दूसरी कोई चीज अंदर ले जाने की इजाजत नहीं थी।

सीईटी परीक्षा के पहले बायोमैट्रिक मशीनें नहीं चलीं, परीक्षार्थी परेशान, कई वंचित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग की ओर से शनिवार को कॉमन इलीजीबलिटी टेस्ट परीक्षा का आयोजन किया गया। यह परीक्षा दो सत्रों प्रातःकालीन एवं सायंकालीन में आयोजित की गई। परीक्षा हालांकि शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हो गई, लेकिन अनेक परीक्षा केंद्रों पर बॉयोमैट्रिक हाजिरी नहीं लगने की परेशानी हुई। यह मशीनें ठीक प्रकार से काम नहीं करने पर कई सेंटरों पर परीक्षा खत्म होने के बाद परीक्षार्थियों को वहीं पर रोके रखा और उनकी बायोमीट्रिक हाजिरी होने के बाद ही उन्हें परीक्षा केंद्रों से बाहर जाने दिया। कई परीक्षार्थी तो बायोमैट्रिक हाजिरी लगाने से वंचित भी रह गए। इसके लिए सरकार को ऐसे वंचित परीक्षार्थियों को हाजिरी लगाने का एक मौका देना पड़ सकता है। इस परीक्षा के दौरान प्रशासन एवं पुलिस पेपर आउट की आशंका के मद्देनजर काफी सर्तक रहे और बार-बार आशंकित ठिकानों पर चेकिंग करते रहे। परीक्षा के मद्देनजर शनिवार को कोचिंग सेंटरों एवं स्कूलों खासकर प्राइवेट स्कूलों तक की छुट्टी कर दी गई। सूत्रों के हवाले से पता चला है कि शनिवार की दोनों शिफ्ट में कुल अभ्यर्थी 40074 को यह परीक्षा देनी थी, लेकिन उनमें से लगभग 37,469 परीक्षार्थी ही हाजिर हुए।

बायोमैट्रिक से वंचित रहे कई परीक्षार्थी

इस परीक्षा के दौरान अनेक स्थानों पर बायोमैट्रिक मशीनों के नहीं चलने से कई परीक्षार्थी हाजिरी से वंचित रह गए। ऐसा मामला पॉलीटेक्नीक में उस समय देखने को मिला, जब वहां प्रातःकालीन सत्र में परीक्षा खत्म हुई। यहां बायोमैट्रिक नहीं चलने पर पेपर खत्म होने उपरांत एक कमरे के परीक्षार्थियों से समाप्ति पर हाजिरी लगवाई जानी थी, लेकिन जैसे ही पेपर खत्म हुआ, परीक्षार्थी सीट छोड़कर वहां से बाहर आ गए, जिस कारण पॉलीटेक्निक लेक्चरर एवं पुलिस कर्मी दौड़कर गेट पर पहुंचे तथा बाहर निकले परीक्षार्थियों को आवाज लगाई, लेकिन कोई लौटकर नहीं आया। ऐसे में स्पष्ट है कि वंचित परीक्षार्थी हाजिरी से वंचित रह गए।

नारनौल। बायोमैट्रिक हाजिरी से वंचित रहे छात्रों को आवाज लगाते पॉलीटेक्नीक लेक्चरर। फोटो: हरिभूमि

नारनौल। परीक्षार्थी के शरीर में छुपे मैटल डिटेक्ट करते हुए। फोटो: हरिभूमि

यह बोले डीसी एवं एसपी

उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने कहा कि आज की परीक्षा का सफल आयोजन अधिकारियों एवं कर्मचारियों पूरी टीम के समर्पण और कड़ी मेहनत का परिणाम है। पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ ने भी सुरक्षा व्यवस्था पर संतोष व्यक्त किया और कहा कि सभी आवश्यक कदम उठाए थे कि परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो। पुलिस बल की मुस्तैदी और नागरिकों के सहयोग से पहला दिन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

नारनौल। दिव्यांग छात्रा निशा अग्रवाल को बाहर लाते पिता। फोटो: हरिभूमि

दिव्यांग का सेंटर बनाया पहले फ्लोर पर, परेशानी

सीईटी परीक्षा के दौरान दिव्यांगों के लिए भले ही राज्य सरकार ने प्रथम फ्लोर पर ही परीक्षा दिलाने की हिदायत जारी की हुई थी, लेकिन गवर्नमेंट पॉलीटेक्नीके दिव्यांग परीक्षार्थी को यह सुविधा नहीं मिली। परीक्षार्थी निशा पूर्णतया दिव्यांग है और अपने पैरों पर न खड़ी हो सकती और न चल सकती। व्हील चेयर भी उनके परिजन चलाते हैं। जब उन्हें परीक्षा केंद्र पर ले जाया गया, तब प्रथम फ्लोर पर नंबर देखकर उनकी परेशानी शुरू हो गई, लेकिन व्हील चेयर की मदद से उन्हें परीक्षा केंद्र में बने कक्ष की सीढ़ियों के पास ले जाया गया, जहां से चार लोगों की मदद से उन्हें उनकी सीट तक पहुंचाया गया। इसको लेकर उनके परिजनों ने नाराजगी व्यक्त की और कहा कि सरकार की हिदायतों का पालन नहीं हो रहा।

महेंद्रगढ़। नारनौल जाने वाले मार्ग पर लगा जाम। फोटो: हरिभूमि

महेंद्रगढ़। अड्डा इंचार्ज को शिकायत देते परीक्षार्थी। फोटो: हरिभूमि

महेंद्रगढ़ में निजी वाहनों ने बिगाड़ी व्यवस्था

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

- परीक्षा समाप्त होते हीं नारनौल-दादरी स्टेट हाईवें पर लगा जाम

परीक्षा केंद्रों के आसपास के क्षेत्रों गोशाला रोड, सिनेमा रोड, राव तुलाराम चौक, महाराणा प्रताप चौक, मसानी चौक, आईटीआई रोड, डुलाना रोड और बुचौली रोड पर जाम की गंभीर स्थिति देखी गई। सबसे अधिक दबाव स्टेट हाईवे 148बी पर देखा गया, जहां रिवासा पुल से कैंची मोड़ तक करीब चार किलोमीटर तक वाहनों की कतारें लगी रहीं।

सरकारी स्तर पर 78 बसों का संचालन किया गया था, जिनमें से 35 सुबह की शिफ्ट और 43 शाम की शिफ्ट के लिए चलाई गईं। ये बसें महेंद्रगढ़ से रेवाड़ी, कोसली और दादरी के परीक्षा केंद्रों के लिए निर्धारित थीं। हालांकि अधिकांश परीक्षार्थी निजी वाहनों से ही पहुंचे, जिससे बसों में अपेक्षित भीड़ नजर नहीं आई।

परीक्षार्थी से बस चालक ने किया अभद्र व्यवहार

सोसायटी बस में गाली-गलौच व अभद्र व्यवहार करने पर परीक्षार्थी ने जीएम के नाम शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की है। शिकायतकर्ता कनीना निवासी निशा कुमारी ने महेंद्रगढ़ बस स्टैंड पर जीएम के नाम दी शिकायत में बताया कि वह अपने पति के साथ रेवाड़ी सीईटी की परीक्षा देने गई थी। परीक्षा के बाद उन्हें अनाज मंडी से महेंद्रगढ़ की बस में बैठने को कहा गया। वहां से बस में बैठकर वापिस आ रहे थे तो उक्त बस के चालक व परिचालक ने उसके पति के साथ अभद्र व्यवहार व गाली गलोच की तथा बीच रास्ते में बस रोककर नीचे उतारने की धमकी भी दी। जिसकी विडियो भी उनके पास है। इस दौरान बस परिचालक रास्ते में अन्य सवारियों को बैठाकर किराया ले रहा था परंतु रास्ते में खड़े परीक्षार्थियों को नहीं बैठा रहा था। इस घटना के बाद वे अपने को सुरक्षित महसूस नहीं करते है। उन्होंने शिकायत में बताया कि यदि उनके साथ कोई किसी प्रकार की दिक्कत होती है तो इसका जिम्मेवार उक्त बस का चालक व परिचालक होगा।

शैक्षिक संसाधनों से लैस करने के लिए शिक्षकों को मिलेगा ईको प्रशिक्षण

- शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों और शैक्षिक संसाधनों से लैस करने के लिए दिया जाएगया यह प्रशिक्षण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद गुरुग्राम की ओर से प्रदेश के सभी एबीआरसी और बीआरपी के लिए एक प्रभावी कक्षा अवलोकन प्रोजेक्ट पर प्रशिक्षण का आयोजन कर रहा है। इसी कड़ी में यह प्रशिक्षण जिला स्तर पर जनवरी प्रशिक्षण का हिस्सा रहे एबीआरसी, प्रशिक्षित एमटी तथा मेंटर प्रदान करेंगे। इसके लिए जारी निर्देशों के अनुसार राज्य के समस्त जिला शिक्षा एवम प्रशिक्षण संस्थान पूर्व में सांझा की गई कार्य योजना के अनुसार इस प्रशिक्षण का संचालन करेंगे। योजना के अनुसार यह प्रशिक्षण दो दिन ऑनलाइन और तीन दिन ऑफलाइन रहेगा।

प्रशिक्षण देने के लिए सभी प्रतिभागियों को डाइट द्वारा निर्धारित समय पर सूचित करना आवश्यक होगा। सभी प्रतिभागी पांच दिन का प्रशिक्षण पूरा करने के लिए ऑन ड्यूटी पत्र भी जारी करना होगा ताकि वे अपना प्रशिक्षण पूरा कर सके। इस प्रशिक्षण के अंत में सभी प्रशिक्षित प्रतिभागियों का मूल्यांकन किया जाएगा। इस प्रशिक्षण में वह ट्रेनर भी शामिल रहेंगे, जिन्होंने जनवरी में प्रशिक्षण प्राप्त किया था लेकिन अंतिम चरण को उत्तीर्ण नहीं कर पाए थे। वे सभी मास्टर ट्रेनर जिन्होंने 21 से 24 जुलाई के दौरान एनसीईआरटी के ओरिएंटेशन में भाग लेना था किंतु भाग नहीं ले पाए वह सोमवार 28 जुलाई तक इस बात के लिए सबूत सहित अपना कारण प्रस्तुत करते हुए उसी दिन 11 बजे ऑनलाइन ओरिएंटेशन में भाग लेंगे। डाइट यह सुनिश्चित करेगी कि जिला प्रशिक्षण से पहले एक मैन्युअल प्रिंट हो जाए और प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को मिल सके।

क्या है ईको प्रशिक्षण

एससीईआरटी द्वारा इको ईसीओ प्रशिक्षण का मतलब है, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा शिक्षकों के लिए आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम। यह प्रशिक्षण, शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों और शैक्षिक संसाधनों से लैस करने के लिए डिजाइन किया गया है, ताकि वे अपनी कक्षा में बेहतर शिक्षण प्रदान कर सकें।

ईको प्रशिक्षण में सहायक

मेंटर की भूमिका पर भी जारी किए निर्देश : एससीईआरटी हरियाणा एवम जिला शिक्षा एवम प्रशिक्षण संस्थान द्वारा मेंटर की भूमिका के विषय में भी निर्देश जारी किए गए हैं। मेंटर को विभाग द्वारा लगाए गए ओरिएंटेशन सत्र में आवश्यक रूप से भाग लेना होगा। सभी मास्टर ट्रेनर को हैन्ड बुक आवश्यक रूप से पढ़ने के लिए भी निर्देशित किया गया है। मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण के लिए रसद की व्यवस्था, बैठने का स्थान, उपकरण और स्टेशनरी आदि की व्यवस्था भी करेंगे। प्रशिक्षण के दौरान छोटे-छोटे समूह में मास्टर ट्रेनर चर्चा करेंगे और प्रशिक्षकों के बीच में गतिविधि व ऊर्जा वर्धन गतिविधियों का आयोजन करते रहेंगे। यथोचित टाइम टेबल की व्यवस्था की जाएगी। प्रशिक्षण के लिए तकनीकी सुविधाएं जैसे स्क्रीन, प्रोजेक्टर, माइक, वाईफाई, पावर बैकअप आदि की व्यवस्था भी करनी होगी। जिला महेंद्रगढ़ में सभी एबीआरसी और बीआरपी इस प्रशिक्षण में भाग लेंगे। इसके लिए सात एवं आठ अगस्त को ऑनलाइन ट्रेनिंग और 11,12 और 13 अगस्त को ऑफलाइन प्रशिक्षण होगा।

श्रीगौड़ ब्राह्मण सभा के प्रधान व सचिव पद के लिए सीधी टक्कर

उपप्रधान, सहसचिव, कोषाध्यक्ष और कार्यकारिणी सदस्य निर्विरोध निर्वाचित

श्रीगौड़ ब्राह्मण सभा की समिति के चुनाव में नामांकन के नाम वापसी के अंतिम दिन वापस लिए जाने के बाद प्रधान व सचिव पद के लिए चुनाव होगा।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

श्रीगौड़ ब्राह्मण सभा की शासकीय समिति के चुनाव में नामांकन के नाम वापसी के अंतिम दिन शनिवार को नाम वापस लिए जाने के बाद प्रधान व सचिव पद के लिए चुनाव होगा। उपप्रधान, सहसचिव, कोषाध्यक्ष के नाम वापस लिए जाने के बादए उन्हें निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। यह जानकारी देते हुए मुख्य चुनाव अधिकारी मनीष वशिष्ठ एडवोकेट ने बताया कि कार्यकारिणी सदस्यों के लिए दो पदों के लिए एक एक नामांकन आने से विजय गोस्वामी व अमित पाण्डे भी निर्विरोध निर्वाचित हो गए हैं। नाम वापसी के समय श्रीगौड़ ब्राह्मण सभा के मुख्य चुनाव अधिकारी मनीष वशिष्ठ एडवोकेट व सहायक चुनाव अधिकारी अंजनी शास्त्री उपस्थित रहे। वशिष्ठ ने बताया कि श्री गौड़ ब्राह्मण सभा की शासकीय समिति के प्रधान, उपप्रधान, सचिव, सहसचिव, कोषाध्यक्ष व दो कार्यकारिणी सदस्यों के लिए चुनाव दो अगस्त को होंगे।

नारनौल। मुख्य चुनाव अधिकारी को नामांकन वापसी का आवेदन सौंपते।

उन्होंने बताया कि शनिवार को नामांकन वापसी के दिन प्रधान पद के लिए मोहित भारद्वाज एडवोकेट ने अपना नामांकन वापस ले लिया। इससे धीरज कुमार व राकेश महता एडवोकेट प्रधान पद की सीधी टक्कर है। सचिव पद के लिए कृष्ण कुमार शर्मा ठेकेदार ढाणी फैजाबाद व राजेश कुमार शर्मा नसीबपुर का मुकाबला है।

प्रधान पद के लिए राकेश महता व सचिव पद के लिए कृष्ण कुमार ने पतंग का चुनाव चिह्न पसंद किया तो प्रधान के लिए धीरज ने व सचिव के लिए राजेश शर्मा ने गैस सिलेण्डर चुनाव चिह्न का चयन किया है।

रामानन्द शर्मा अटेली उप प्रधान निर्वाचित

वशिष्ठ ने बताया कि उपप्रधान पद पर सत्यवीर शर्मा सुरानी के नाम वापस लिए जाने के बाद रामानन्द शर्मा अटेली उप प्रधान निर्वाचित हो गए हैं। सहसचिव पद के लिए राकेश कौशिक एडवोकेट के नामांकन वापस लिए जाने से हेमन्त कृष्ण भारद्वाज एडवोकेट निर्वाचित घोषित हो गए हैं। वहीं कोषाध्यक्ष पद के लिए हेमन्त शर्मा बीगोपुर के नाम वापस ले लिया, जिससे शिवकुमार शर्मा छापड़ा बीबीपुर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए हैं। वशिष्ठ ने बताया कि कार्यकारिणी सदस्य पद के लिए विजय गोस्वामी व अमित पाण्डे का एक एक नामांकन आने से वह भी निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए हैं।

रवि गर्ग युवा इकाई के प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोनीत

- जो जिम्मेदारी दी गई है उसका बखूबी से पालन करेंगे
- समाज के युवाओं को एकजुट करना और उन्हें समाज के विकास में भागीदार बनाएंगे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

अग्रवाल वैश्य समाज के प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला ने रवि गर्ग उर्फ मोनू भाटा को अग्रवाल वैश्य समाज युवा इकाई का प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोनीत किया। अपनी नियुक्ति के लिए रवि गर्ग ने प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला, कार्यकारी अध्यक्ष सुभाष तायल, प्रदेश उपाध्यक्ष पवन अग्रवाल, प्रदेश महासचिव राजेश सिंगला, प्रदेश महासचिव बलराम गुप्ता, प्रदेश मंत्री मुकेश बंसल व जिला अध्यक्ष संदीप नूनीवाला का आभार व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि जो जिम्मेदारी दी गई है उसका बखूबी से पालन करेंगे। रवि गर्ग इससे पूर्व प्रदेश के युवा महासचिव पद पर थे तथा अग्रवाल सभा नारनौल के निर्वाचित महामंत्री भी है। उन्होंने कहा कि अग्रवाल वैश्य समाज का उद्देश्य समाज के युवाओं को एकजुट करना और उन्हें समाज के विकास में सक्रिय रूप से भागीदार बनाना है।

रवि गर्ग।

रवि गर्ग की नियुक्ति पर प्रदेश महासचिव जगमोहन गर्ग, नारनौल विधानसभा अध्यक्ष राजेश अग्रवाल, जिला युवा अध्यक्ष चिराग अग्रवाल, जिला उपाध्यक्ष सीताराम सर्राफ, महेंद्र बंसल, तुलसी गोयल, मोहित जिंदल, संजय गोयल, राजकुमार चौधरी एडवोकेट, सुमत जैन, आनंद गुप्ता, अशोक कंछल, उमेश मित्तल, रविंद्र बंसल, संजय मित्तल, नवीन केडिया, निखिल जैन, सुमित अग्रवाल, कृष्ण अग्रवाल, बसंत गोयल, कृष्ण गोयल, विनोद गर्ग व पूरन चंद सिंघल ने बधाई दी।

खबर संक्षेप

एक से सात अगस्त तक श्रीमद्भागवत कथा होगी

नारनौल। महेंद्रगढ़ रोड स्थित गांव रामपुरा में बाबा भैया आश्रम के वार्षिक उत्सव पर एक से सात अगस्त के बीच श्रीमद्भागवत कथा होगी। सुबह 11 बजे से दोपहर तीन बजे तक बाबा भैया आश्रम में होने वाली इस कथा में वृंदावन धाम से कथा वाचक राधा किशोरी होगी। प्रथम दिन एक अगस्त को कलश यात्रा सुबह आठ बजे निकाली जाएगी।

पंद्रह विद्यार्थी सहायक उपकरण के लिए चयनित

नारनौल। समग्र शिक्षा विभाग जिला महेंद्रगढ़ द्वारा स्कूलों में पढ़ रहे दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए चिकित्सा मूल्यांकन शिविर का आयोजन किया गया। इस संदर्भ में जानकारी देते हुए राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की प्राचार्या प्रोमिला यादव ने बताया कि नागरिक अस्पताल में शुक्रवार में विशेष मूल्यांकन अभियान चलाया गया। नारनौल खण्ड के इस शिविर में कुल 39 दिव्यांग विद्यार्थी पंजीकरण के लिए उपस्थित हुए। इसमें 15 विद्यार्थियों का सहायक उपकरण के लिए चयन किया गया एवं 17 विद्यार्थियों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र के लिए चुना गया है।

अधिवक्ता चौधरी रामचंद्र का निधन

नारनौल। जिला बार एसोसिएशन के वरिष्ठ अधिवक्ता चौधरी रामचंद्र का देहांत हो गया। जिनका दाहसंस्कार शनिवार को स्वर्गाश्रम रेवाड़ी रोड पर किया गया। अंतिम दर्शन के लिए सेशन जज नरेन्द्र सूरा, एडिशनल सेशन जज केपी सिंह सहित काफी संख्या में नारनौल बार व दिल्ली बार से अधिवक्तागण, क्षेत्र के गणमान्य मौजूद रहे।

महाशय हरफूल सिंह का निधन

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव बिहाली निवासी महाशय हरफूल सिंह का निधन हो गया। वह 94 वर्ष के थे। वे वैदिक विचारधारा में लीन होने के साथ-साथ सामाजिक और मिलनसार व्यक्ति थे। महाशय हरफूल सिंह ने सत्याग्रह आंदोलन में विशेष भूमिका निभाई थी। उन्होंने 1955 में शिक्षा का अलख जगाने में आर्य विचारों से लोगों को जागरूक किया ।

स्वाति बड़कोदिया ने किया यूजीसी नेट पास

नारनौल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय डेरोली अहीर में कार्यरत बाबू मदन लाल की सुपुत्री कुमारी स्वाति ने प्रथम प्रयास में ही हिंदी विषय में कॉलेज में प्रोफेसर लगने की पात्रता परीक्षा पास कर ली है।

98 वर्षीय भगवान सिंह का निधन

महेंद्रगढ़। गांव गाहड़ा निवासी 98 वर्षीय भगवान सिंह का शनिवार की सुबह निधन हो गया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। स्वर्गीय भगवान सिंह सादा जीवन उच्च विचार वाला जीवन व्यतीत करते थे।

कारगिल विजय दिवस के वीरों की याद में रैली निकाल कर नमन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

मेरा युवा भारत नारनौल की ओर से युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के तत्वावधान में कारगिल विजय दिवस के अवसर पर स्मरणीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य 1999 के कारगिल युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करना और युवाओं में देशभक्ति की भावना को सुदृढ़ करना रहा। यह कार्यक्रम स्लम एरिया टैलेंट के प्रांगण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अध्यक्ष ऑल इंडिया एक्स सर्विसमैन एसोसिएशन धर्मपाल चौधरी, विशिष्ट अतिथि पूर्व वैज्ञानिक भाजपा जिला उपाध्यक्ष वासुदेव, जिला युवा अधिकारी नित्यानंद यादव, भूपसिंह भारती, शिवकुमार मित्तल, सतपाल सुलोदिया, महेन्द्र सिंह लेखाकार, हनी गुप्ता थे। स्लम एरिया टैलेंट से सोनाली, रीना व गरिमा ने कारगिल युद्ध में भारतीय योद्धाओं के शोर्य व साहस बारे में बताया कि कैसे हमारे कैप्टन सौरभ कालिया, कैप्टन मनोज पांडेय, कैप्टन विक्रम बत्रा, कैप्टन अनुज नय्यर जैसे अनेक शूरवीरों ने पाकिस्तानी सेना के दांत खट्टे किए और देश के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया तथा कारगिल पर विजय पताका फहराई। युवाओं में देश भक्ति की भावना सुदृढ़ करने के लिए रैली भी निकाली गई।

नारनौल। कारगिल विजय दिवस पर रैली निकालते हुए। फोटो : हरिभूमि

साइकिल चलाकर किया नशे के खिलाफ जागरूक

नारनौल। हरियाणा पुलिस विभाग की ओर से नशे के खिलाफ निरंतर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस कड़ी में ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने अटेली मंडी से नारनौल के मार्ग पर साइकिल चलाकर लोगों को नशा मुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अनेक सार्वजनिक स्थानों पर लोगों को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक किया। सार्वजनिक स्थानों पर युवाओं को एकत्रित कर नशे के खिलाफ जागरूक करते हुए डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने बताया कि ब्यूरो की अेर से प्रदेश के जन जन को नशे के खिलाफ जागरूक किया जा रहा है, ताकि कोई व्यक्ति जागरूकता से वंचित न रह जाए। हरियाणा सरकार की ओर से नशा मुक्त व योग युक्त जीवन अपनाने के लिए भरसक प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो व पुलिस निरंतर नशा तस्करों की धरपकड़ में जुटी हुई है।

लेफ्टिनेंट बनने पर पैतृक गांव भोजावास में सलोनी का किया गया अभिनंदन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज से सीधे लेफ्टिनेंट बनने पर पैतृक गांव भोजावास में सलोनी पौत्री ठाकुर नत्थूसिंह का अभिनंदन किया गया। बाबा जिंदादेव भोजावास में आयोजित अभिनंदन समारोह में प्रमुख समाजसेवी बसपा नेता अतरलाल ने सलोनी को साफा पहनाकर तथा प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया। अतरलाल ने कहा कि सलोनी ने सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज से सीधे लेफ्टिनेंट बनकर न केवल जिला महेन्द्रगढ़ का बल्कि पूरे हरियाणा का नाम रोशन किया है। इससे लड़कियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।

उन्होंने इलाकावासियों से लड़कियों की शिक्षा तथा परवरिश पर विशेष ध्यान देने की अपील की। सलोनी ने अपनी सफलता का श्रेय अपनी माता कूकल देवी तथा पिता अजीत सिंह तथा गुरुजनों को देते हुए कहा कि लक्ष्य बनाकर कठिन परिश्रम करने से कोई भी लक्ष्य और सफलता हासिल की जा सकती है। उन्होंने युवाओं को धैर्य व आत्मविश्वास के साथ अपना लक्ष्य प्राप्त करने की सलाह दी। इस अवसर पर परिवार की ओर से भंडारा आयोजित किया गया। इस मौके पर भागसिंह चेयरमैन, पूर्व मंडल प्रधान अतर सिंह कैमला, कालूराम बोहरा, साधुसिंह, कंवर सिंह तंवर, अजीत सिंह, ब्लॉक समिति मेंबर परमानंद, जयपाल सिंह थानेदार, सुमन देवी, सागर सिंह, पवन, कैलाश सेठ, विक्रम सिंह आदि मौजूद थे।

नारनौल। सलोनी को सम्मानित करते प्रमुख समाजसेवी अतरलाल।

नारनौल। वरिष्ठ व्यापारी नेता बजरंग लाल अग्रवाल को प्रदेश चेयरमैन का पदभार सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

बजरंग लाल अग्रवाल बने व्यापार मंडल के प्रदेश चेयरमैन

नारनौल। यूपी का आतंक अब हरियाणा में पनप रहा है। व्यापारियों के साथ आए दिन लूटपाट, डकैती एवं मर्डर हो रहे हैं। इससे प्रदेश में आतंक का माहौल है और व्यापारियों में खौफ बना हुआ है। यदि प्रदेश सरकार ने शीघ्र इस पर काबू नहीं पाया और व्यापारियों को सुरक्षा प्रदान नहीं की तो राज्य के सभी व्यापारी उनके एक इशारे पर आंदोलन करने को तैयार हैं। यह चेतावनी हरियाणा व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष विजय लक्ष्मीचंद गुप्ता ने अपार होटल में आयोजित व्यापारियों की मीटिंग को संबोधित करते हुए दी। वे यहां व्यापार मंडल की नवगठित कार्यकारिणी को पदभार सौंपने आए हुए थे। इस मौके पर हरियाणा व्यापार मंडल के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जिलाध्यक्ष बजरंग लाल अग्रवाल को प्रदेश में रिक्त पड़े चेयरमैन का पद नवाजा गया। वहीं वैद्य किशन वशिष्ठ को जिला अध्यक्ष व सुरेंद्र चौधरी को वरिष्ठ जिला महामंत्री का पदभार दिया गया। मीटिंग में प्रदेश संगठन मंत्री कांति शर्मा, भिवानी के जिलाध्यक्ष भानु प्रकाश शर्मा, दादरी के प्रधान बलराम गुप्ता तथा रोहतक के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामौतार जाबिया, पम्मी चौधरी, सरदार बलदेव सिंह चहल एवं संदीप नूनीवाला समेत गणमान्य व्यापारी मौजूद रहे।

समाजसेवी स्व. नीरज मित्तल की पुण्यतिथि पर 55 यूनिट रक्त एकत्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

समाज सेवी स्वर्गीय नीरज मित्तल मांढ़ी वाले की पुण्य तिथि पर दूसरे विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन रेलवे रोड स्थित मंगतूराम महाशय की धर्मशाला में किया गया। इस शिविर के मुख्यातिथि स्थानीय विधायक कंवरसिंह व अध्यक्षता भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी के हरियाणा महासचिव महेश जोशी ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर पालिका प्रधान रमेश सैनी एवं भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के युवा अध्यक्ष पवन खैरवाल भी वहां पहुंचे। मंच संचालन मुकेश मेहता ने किया। समाजसेवी स्वर्गीय नीरज मित्तल के जीवन परिचय पर प्रकाश डालते हुए उनके साथ बिताए हुए पलों को सांझा किया। सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया गया तथा उनके करकमलों से सभी रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र एवं समृद्धि चिन्ह आदि देकर सम्मानित किया गया। मुख्यातिथि कंवर सिंह यादव एवं महेश जोशी ने बताया कि रक्तदान एक महादान एवं पुण्य का कार्य है। यदि आपके द्वारा दान में दी गई रक्त की चंद बूंदों से किसी को जीवनदान मिलता है तो इससे बड़ा पुण्य का और कोई कार्य नहीं है। शिविर प्रबंधक संजय मित्तल एवं हर्षित मित्तल ने बताया कि अक्सर लोग ब्लड देने से डरते हैं या संकोच करते हैं, जबकि यह उनके लिए फायदेमंद है। विजय अस्पताल नारनौल के डॉक्टर अंकित चौधरी एवं उनकी टीम के द्वारा सभी रक्तदाताओं की उचित स्वास्थ्य जांच करके उनसे 55 यूनिट रक्त एकत्र किया गया।

महेंद्रगढ़। रक्तदाता को बैज लगाते हुए। फोटो : हरिभूमि

नारनौल। हरे चारे की सवामणी में हिस्सा लेते शाखा सदस्य। फोटो : हरिभूमि

भारत विकास परिषद ने गोशाला में लगाया सवामणी

नारनौल। भारत विकास परिषद की ओर से 15वीं गौमाता हरे चारे की सवामणी का आयोजन शनिवार सुबह श्रीगोपाल गौशाला में श्रद्धा और सेवा भाव से किया गया। यह सवामणी यशपाल अरोड़ा द्वारा उनकी पुत्रवधु स्व. नेहा अरोड़ा धर्मपत्नी नितिन अरोड़ा की पांचवीं पुण्यतिथि की पुण्य स्मृति में समर्पित की गई। कार्यक्रम में परिषद के सभी सदस्यों, श्रद्धालु नागरिकों एवं गौसेवकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। प्रातः सात बजे शुरू हुए इस पुण्य आयोजन में गौमाताओं को हरे चारे का भोग अर्पित किया गया और भावपूर्ण वातावरण में स्मरण सभा भी की गई। गौमाता सवामणी प्रकल्प संयोजक नवीन गुप्ता ने बताया कि परिषद निरंतर गौसेवा के इस पुनीत कार्य में संलग्न है और समाज को प्रेरणा देने का कार्य कर रही है। सेवा प्रमुख पवन यादव ने कहा कि इस आयोजन के माध्यम से हम पुण्यस्मृति को सेवा के रूप में परिवर्तित करने का प्रयास करते हैं। कार्यक्रम में शाखा अध्यक्ष कविन्द्र सचदेवा, सचिव मुकेश जैन, कोषाध्यक्ष नवीन गुप्ता, सेवा प्रमुख पवन यादव, पवन अरोड़ा, सुनील चुघ, सुनील मित्तल, वीडी वशिष्ठ, सुभाष कश्यप, नरोत्तम सोनी, देवी प्रकाश जांगिड, मनोज सोलंकी, प्रदीप यादव, सोनाली अरोड़ा सहित परिषद के अनेक पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

खामपुरा महिला सरपंच की पहल पति संग सैकड़ों पौधे लगाए

- पौधे लगाकर पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर संकल्पित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

क्षेत्र के गांव खामपुरा की महिला सरपंच प्रियंका देवी ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक पहल की है। उन्होंने अपने पति विकास यादव के साथ पंचायती भूमि पर पौधारोपण करने का फैसला लिया। उन्होंने गांव के जोहड़ एवं खेल ग्राउंड के समीप सैकड़ों की संख्या में फलदार एवं छायादार पौधे लगाए। इस मौके पर सरपंच प्रियंका देवी ने बताया कि महामारी कोरोना काल में यह सबको मालूम हो गया है कि जीवन में आक्सीजन का क्या महत्व है। वायुमंडल में अधिक मात्रा में आक्सीजन होगी, तभी शुद्ध हवा मिलेगी। उन्होंने बताया कि वह शुरू से ही पौधे लगाकर पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर संकल्पित हैं। मौजूदा समय में ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने की जरूरत है। इस अभियान का उद्देश्य भावी पीढ़ी को पर्यावरण का संरक्षण करने के लिए प्रेरित करना है। इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि इंद्रजीत एवं गांव के अन्य लोग भी मौजूद रहे।

मंडी अटेली। अपने पति संग पौधारोपण करती सरपंच प्रियंका देवी।

यूरिया खाद की किल्लत से किसानों को झेलनी पड़ रही है परेशानी

शहबाजपुर डिस्ट्रीब्यूटरी की टेल तक पानी पहुंचाने की हिदायत, जोहड़ भरने को मिलेगी प्राथमिकता: मंजू चौधरी

- नांगल चौधरी की विधायक मंजू चौधरी ने सिंचाई विभाग के अधीक्षक अभियंता से मुलाकात की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

नांगल चौधरी की विधायक मंजू चौधरी ने सिंचाई विभाग के अधीक्षक अभियंता से मुलाकात की। उन्हें शहबाजपुर डिस्ट्रीब्यूटरी की सूखी टेल से अवगत कराया तथा रविवार की शाम तक दोस्तपुर पर पानी पहुंचाने की हिदायत दी है। अधिकारियों को जोहड़ों में पानी पहुंचाने के निर्देश दिए हैं ताकि मवेशियों को पेयजल की सुविधा मिले और भूजल रिचार्ज करने में मदद मिले।

विधायक मंजू चौधरी।

उन्होंने कहा कि बारिश होते ही नहरी पानी की डिमांड कम हो गई। फसलों को सिंचाई की जरूरत नहीं बावजूद अधिकाशं गांवों के जोहड़ खाली हैं। विभाग ने करोड़ों की लागत से भूजल रिचार्ज के प्वाइंट बनाए हैं लेकिन पानी नहीं भरा गया। जिसका खामियाजा किसानों को भुगतना पड़ेगा, इसलिए विभाग को पानी की सप्लाई बढ़ाने पर फोकस करना जरूरी है। शहबाजपुर डिस्ट्रीब्यूटरी से अटेच अधिकतर गांव पहाड़ों की तलहटी पर बसे हैं जहां पीने के लिए पानी की किल्लत रहती है। ग्रामीणों की शिकायत मिलने पर विधायक ने दोस्तपुर, भेडंटी, नांगल दुर्गू, बखरीजा, बिगोपुर, इस्लामपुरा के जोहड़ों का निरीक्षण किया।

इसके बाद सिंचाई विभाग के जेई, एसडीओ, कार्यकारी अभियंता, अधीक्षक अभियंता के साथ मीटिंग की और पानी सप्लाई की रिपोर्ट तलब की। अधिकारियों ने रिपोर्ट देते हुए कहा कि टेल पर पानी पहुंचाने के भरसक प्रयास कर रहे हैं। आगामी तीन महीने तक नहरों में पानी उपलब्ध रहेगा, इस अवधि में सभी गांवों के जोहड़ भर दिए जाएंगे।

इस दौरान विधायक ने कृष्णावती नदी में पानी डालने की हिदायत दी। कहा कि पानी का अंधाधुंध दोहन होने के कारण कृषि बोरवेल ठप हो गए हैं, रिचार्ज के लिए कृष्णावती नदी की खदानों में पानी डालना जरूरी है। उन्होंने रविवार तक दोस्तपुर-भेडंटी तक नहरी पानी पहुंचाने का टारगेट दिया है। अधिकारियों ने आश्वासन दिया है कि डिस्ट्रीब्यूटरी की टेल से जोहड़ भरने की शुरूआत करेंगे।

किसान परेशान, आपूर्ति करने की मांग

विधायक मंजू चौधरी ने कहा कि महेंद्रगढ़ जिले में यूरिया खाद की किल्लत बनी हुई है। जिस कारण बाजरे की फसल पीली पड़ गई और ग्रोथ रूकने लगी है। फसल बुवाई के समय किसानों को डीएपी खाद भी मिलती और कालाबाजारी का सामना करना पड़ता है। उन्होंने प्रदेश सरकार से जिले को जरूरत के अनुसार यूरिया और डीएपी स्टॉक उपलब्ध कराने का आग्रह किया है।

एकलव्य के भविष्य ने शूटिंग में लहराया परचम

नारनौल। शहर में रेवाड़ी रोड स्थित एकलव्य स्पोर्ट्स शूटिंग एकेडमी के शूटर भविष्य ने केंद्रीय विद्यालय नेशनल में सिल्वर मेडल जीता है। एकेडमी के सचिव सुरेश चौहान एडवोकेट ने जानकारी देते हुए बताया कि यह प्रतियोगिता एलपी यूनिवर्सिटी फगवाड़ा में 22 से 25 जुलाई तक आयोजित हुई है।

जिसमें एकेडमी के पिस्टल शूटर भविष्य ने 10 मीटर एयर पिस्टल इवेंट में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। इस प्रतियोगिता में पूरे देश के केंद्रीय विद्यालय के बच्चों ने भाग लिया था, जो केवीएस जोनल में चयनित होकर आए थे। अब भविष्य 69वे एसजीएफआई स्कूल गेम्स में क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करेगा। भविष्य नारनौल के केवीएस रघुनाथपुरा स्कूल का छात्र है। भविष्य ने इस उपलब्धि से अपने माता पिता के साथ साथ अपने स्कूल कोच व नारनौल का नाम देश भर में किया है।

सहकार भारती का दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

■ दीवान कॉलोनी निवासी पारस शर्मा जिला अध्यक्ष तो भगडाना निवासी डॉ. अरविंद यादव बने जिला महामंत्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

सहकार भारती का दो दिवसीय प्रदेश प्रशिक्षण शिविर 24-25 जुलाई को गुरुग्राम के एनसीडीसी कार्यालय में आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य रूप से सहकारिता के राष्ट्रीय संगठन मंत्री संजय पांचपौर, हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष राजबीर गोदारा, प्रदेश के महामंत्री सौरव भीष्म, प्रदेश के सह संगठन मंत्री अनुपम समेत प्रांत के अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

इस अवसर पर विभिन्न जिलों और प्रांत के कार्यकारिणी का गठन भी किया गया, जिसमें महेंद्रगढ़ के राठीवास निवासी राजू शर्मा को प्रांत उपाध्यक्ष, महेंद्रगढ़ के मौहल्ला महायचान निवासी सचिन महायच को प्रांत संपर्क प्रमुख, महेंद्रगढ़ शहर के दीवान कॉलोनी निवासी एडवोकेट पारस शर्मा को जिला अध्यक्ष एवं महेंद्रगढ़ भगडाना निवासी डॉ. अरविंद यादव को जिला महामंत्री का दायित्व सौंपा गया। राष्ट्रीय संगठन मंत्री संजय ने सभी नवदायित्व कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और कहा कि नई टीम का जो गठन हुआ है, वह सहकारिता के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेगी। जिला केंद्रीय सहकारी बैंक प्रदेश सहकारी बैंकों के साथ मिलकर एवं पैक्स की सरंचना तक कार्य किया जाएगा। प्रदेश में कार्य कर रहे स्वयं सहायता समूहों को सहकारिता से जोड़ा जाएगा ताकि भविष्य में एक विस्तृत डाटा सहकारिता के पास हो और सामान्य जनमानस का किसी भी प्रकार से शोषण के विरुद्ध पुरजोर आवाज उठाई जाएगी। प्रदेश महामंत्री सौरभ भीष्म ने कहा कि प्रदेश में जिला ग्रामीण एवं शहरी विकास बैंक के साथ समन्वय स्थापित कर हमारी प्रदेश एवं जिला टीम सहकारिता जनआंदोलन का पर्याय बनेगी, हम वंचितों की आवाज बनेंगे और उनके हक अधिकार के लिए लड़ाई लड़ेंगे।

नियुक्त जिला अध्यक्ष पारस शर्मा ने कहा कि किस संगठन द्वारा जो विश्वास मुझे पर जताया गया है, उसक खरा उतरने का प्रयास करेंगा। जिले के प्रत्येक गांव तक शेखर भारती से कार्यकर्ताओं को जोड़ा जाएगा। गांव स्तर पर आने वाली समस्याओं को जिला केंद्रीय विकास लिमिटेड बैंकों के समक्ष रखकर उनकी समस्याओं का समाधान करवाया जाएगा। जिला स्तर पर योग्य कार्यकर्ताओं को जिम्मेवारियां दी जाएगी, जो संगठन के विचार को गांव स्तर तक लेकर जाएंगे। डॉ. अरविंद यादव ने अपनी जिम्मेदारी पर संगठन का आभार जताया और कहा कि हम जिला स्तर पर सहकारिता को मजबूत करेंगे।

महेंद्रगढ़। नवनियुक्त कार्यकर्ताओं को पटका पहनाकर सम्मानित करते हुए।

बचपन प्ले स्कूल में मनाया हरियाली तीज उत्सव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

बचपन प्ले स्कूल स्कूल में हरियाली तीज उत्सव धूमधाम से मनाया गया, जिसमें विद्यालय की दूसरी ब्रांच किड्स गार्डन प्ले स्कूल के बच्चों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के बच्चों द्वारा पतंग उड़ाना, अंब्रेला डेकोरेशन करना, लड़कियों द्वारा मेहंदी लगाना, झूला झूलना और विद्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में सावन के गीतों की प्रस्तुति देना आदि शामिल रहा।

चेयरमैन रमेश सैनी एवं चेयरपर्सन निशा सैनी ने बताया कि सावन तीज, जिसे हरियाली तीज भी कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण हिंदू पर्व है, जो भगवान शिव और देवी पार्वती के पुनर्मिलन का प्रतीक है।

यह त्यौहार महिलाओं के लिए विशेष महत्व रखता है। इस अवसर पर विद्यालय संस्थापक शेरसिंह सैनी, प्राचार्या ज्योति शर्मा, प्राचार्या सविता यादव, बचपन हेड रूपाली अरोड़ा, उपप्राचार्या मोनिका दीवान, प्रवक्ता अमरसिंह सोनी, पूनम गोस्वामी, महिमा, महक, रेनू, नवीना, रीटा शर्मा सहित विद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

महेंद्रगढ़। बनाई हुई पतंग दिखाते। फोटो : हरिभूमि

राव नेतराम स्कूल में सीबीएसई प्रतियोगिता आयोजित

नारनौल। सीबीएसई कैलस्टर-15 के खो-खो खेल का आयोजन राव नेतराम पब्लिक स्कूल सलीमपुर में किया गया। जिसका शुभारंभ सांसद चौधरी धर्मबीर, पूर्व विधायक सीताराम, जिला खेल अधिकारी नरेन्द्र कुन्डू व एईओ रमेश कुमार, आरती राव सरपंच सलीमपुर, भाजपा जिला अध्यक्ष यतेन्द्र राव, नगर पालिका चेयरमैन संजय गोयल ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। प्राचार्चा अनिता देवी ने बताया कि यह प्रतियोगिता 26 जूलाई से 28 जूलाई तक विद्यालय परिसर में आयोजित होगी। इस प्रतियोगिता के अन्डर-19 में कल्पना चावला स्कूल सोनीपत, देवयानी स्कूल बेवल, आईडी स्कूल रोहतक सहित 11 टीमें व अन्डर-17 में आनन्द स्कूल भिवानी, नालन्दा स्कूल सापला, एचडी ग्रीन स्कूल झज्जर सहित 23 टीमें तथा अन्डर-14 में जीबीएल स्कूल फरीदाबाद, आरपीएस स्कूल नारनौल, कृष्णा स्कूल कोसली सहित व पूल द्वितीय में आनन्द स्कूल भिवानी, रायल स्कूल गुरुग्राम, एसवी स्कूल सापला सहित 30 टीमों के लगभग 900 खिलाड़ी भाग लेंगे। इस प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ा जोनल लेवल पर होने वाली प्रतियोगिता में भाग लेंगे। सांसद धर्मबीर भिवानी ने कहा कि खेलों से तन-मन व बुद्वि तथा शारीरिक विकास होता है।

वेदांता स्कूल में मनाई हरियाली तीज

नारनौल। महेंद्रगढ़ रोड स्थित वेदान्ता इंटरनेशनल स्कूल गुलावला में हरियाली व भक्ति के प्रतीक हरियाली तीज का आयोजन स्कूल परिसर में किया गया। इस अवसर पर बच्चों ने स्कूल को फूलों व रंगोली बनाकर सजाया। छोटे बच्चों ने पारंपरिक परिधान पहनकर नृत्य किया। वहीं बच्चों ने लोकगीत गाकर मन मोह लिया। चेयरमैन विनोद कुमार ने सभी बच्चों को तीज के पर्व की महत्ता बताकर उनका उत्सहवर्जन किया। इस अवसर पर बच्चों के लिए पंतग उड़ाने व बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। प्रथम, द्वितीय व तीसरे स्थान पर आने वाले बच्चों को सम्मानित भी किया गया।

एसडी स्कूल में मनाया हरियाली तीज पर्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

हरियाली तीज के अवसर पर एसडी विद्यालय ककराला के विद्यार्थियों ने पतंगबाजी की। विद्यार्थियों ने सावन माह के मधुर गीतों व महिलाओं के झूलों पर भी प्रकाश डाला। विद्यार्थियों ने झूलों व पतंगबाजी में उत्साह दिखाया। निदेशक जगदेव यादव ने विद्यार्थियों व स्टॉफ को हरियाली तीज के महत्व को लेकर बताया कि श्रावण मास शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाने वाला यह पर्व हरियाली व खुशहाली का प्रतीक है। इस समय प्रकृति का नजारा अद्भुत होता है, जो जीवन में उत्साह प्रतीक है। वर्षा का अधिक प्रभाव होने के कारण धरती पर हरियाली की चादर सी बिछी हुई प्रतीत होती है, इसलिए इस त्योहार को हरियाली तीज भी कहा जाता है। इस मौके पर प्राचार्य ओमप्रकाश, समन्यवक ईश्वर सिंह, जोगेन्द्र सिंह, स्नेहयादव, प्रियंका आदि मौजूद थे।

कनीना। हरियाली तीज पर्व में हिस्सा लेने वाले विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

नगर पालिका चेयरपर्सन ने किया नवनियुक्त डीएमसी का अभिनंदन

■ साफ-सफाई कचरा निपटान व डोर टू डोर कूड़ा उठाने की योजना पर रहा फोकस

कनीना। डीएमसी रणवीर सिंह का स्वागत करती नपा चेयरपर्सन डॉ. रिंपी लोढ़ा। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

नगर पालिका क्षेत्र में विकास कार्यों को गति देने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे है। ये बात नगर पालिका की चेयरपर्सन डॉ. रिंपी लोढ़ा ने नवनियुक्त जिला नगर पालिका आयुक्त रणवीर सिंह का स्वागत करने के बाद अनौपचारिक बैठक के बाद कही। उन्होंने कहा कि डीएमसी रणवीर सिंह से विभिन्न पहलुओं पर बातचीत हुई। जिन पर उनका सकारात्मक दृष्टिकोण रहा। साफ सफाई, पानी निकासी, पेयजल, कचरा निपटान वाहन, बिजली एवं डोर टू डोर कचरा उठान योजना सहित उन्होंने नगर पालिका के सारे हालातों पर फोकस किया।

कनीना नपा क्षेत्र में 1950 लाइटें लगी हुई हैं, करीब 500 लाइटों की डिमांड ओर की गई है। बारिश के मौसम में कुछ लाइटें खराब हो गई हैं। जिनकी रिपेयर के लिए शीघ्र ही कार्य अलाट करने की योजना है। लाइटों की नियमित रूप से देखरेख के लिए लाइट इंस्पेक्टर बिरेंद्र सिंह की नियुक्ति की गई है। कनीना महेंद्रगढ़ व अटेली सड़क मार्ग बीते समय तिरंगा लाइटें लगाई गई थी। जिनमें से कुछ लाइटें चोरी हो गई। उनकी बरामदगी के लिए सीसीटीटी कैमरों को खंगाला जा रहा है। नगर पालिका की चेयरपर्सन डॉ. रिंपी लोढ़ा ने बताया कि नगर पालिका की दुकानों का किराया लंबित है। जिससे विकास कार्यों में बाधा आ रही है। उनकी ओर से जनहित के कार्य प्राथमिकता के आधार पर करवाएं जा रहे हैं। शहर की सुंदरता को बनाए रखने के लिए आमजन का सहयोग जरूरी है।

प्रत्येक नागरिक स्वच्छता को लेकर अपनी जिम्मेवारी समझे व कूड़े को एकत्रित कर उसका सही जगह पर निष्पादन करे। घर घर से कूड़ा उठाने के की योजना को जल्द ही मूर्त रूप दिया जाएगा। डीएमसी रणवीर सिंह ने कहा कि उन्होंने बतौर डीएमसी कार्यभार ग्रहण किया है। इसके बाद जिले की नगर परिषद व नगर पालिका का दौरा कर अवलोकन किया जा रहा है। शहर की सुंदरता को बनाए रखने के लिए प्राथमिकता के आधार पर विकास कार्य करवाए जाएंगे।

इंद्रप्रस्थ स्कूल में खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिता एक से

नारनौल। शिक्षा विभाग हरियाणा की ओर से इंद्रप्रस्थ सीनियर सेकेंडरी स्कूल चिंडालिया में एक अगस्त से पांच अगस्त तक खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। इसमें वॉलीबॉल अंडर 14, 17, 19 लड़का लड़की, खो खो अंडर 11, 14, 17, 19 लड़का लड़की, कबड्डी अंडर 11, 14, 17, 19 लड़का लड़की, एथलटिक अंडर 11, 14, 17, 19 लड़का लड़की, टैग ऑफ वार अंडर 11 आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। संस्थापक अनिल लांबा ने बताया कि एक से दो अगस्त तक लड़कों तथा चार से पांच अगस्त तक लड़कियों की खेल प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। समस्त खेल प्रतियोगिताएं एसजीएफआई के नियम अनुसार आयोजित करवाई जाएगी। लड़कियों के साथ महिला अध्यापिका का होना अति आवश्यक है। खटोटी मोड़ से खेल मैदान तक निःशुल्क वाहन सुविधा उपलब्ध रहेगी।

बिजली निगम की लापरवाही: एक माह में भेजे दो बिल, दूसरा 78 लाख 90 हजार का

नारनौल। दक्षिणी हरियाणा विद्युत निगम के नारनौल कार्यालय द्वारा सीहमा खंड के गांव डेरोली अहीर की एक उपभोक्ता सुनीता देवी पत्नी यशपाल को जुलाई महीने को लेकर दो बिल भेजे गए हैं, जिसमे पहले पहुंचे बिल में निगम ने 3545 रुपये दर्शाए हैं, वही दूसरा बिल उपभोक्ता को 78 लाख 90 हजार रुपये का भेजा गया है। बिल देखकर उपभोक्ता सुनीता देवी के पैरों तले की जमीन खिसक गई और टेंशन में आ गई। डेरोली निवासी सुनीता देवी के पति यशपाल ने बताया कि उन्होंने डेरोली अहीर में एक कॉलेज खोला हुआ है, जिसका हर महीने कमर्शियल बिल लगभग तीन से चार हजार रुपये के बीच में आता है, जिसको वे ऑनलाइन भरते रहे हैं। जुलाई महीने उनके पास पहला बिल 3545 का पहुंचा, वहीं इसी महीने का दूसरा बिल 78 लाख 90 हजार का 845 रुपये का पहुंच गया। दोनों बिलों को देखकर वह हैरत में है। उन्होंने कहा कि इससे पहले उनके साथ कभी ऐसा नहीं हुआ है। सुनीता देवी के साथ उनके पति यशपाल ने विद्युत निगम के अधिकारियों से मांग करते हुए कहा कि विभाग द्वारा जो 78 लाख 90 हजार 845 रुपये का बिल जो भेजा गया है, उसको ठीक किया जाए, ताकि ये पीछे की भांति निगम को बिल की अदायगी समय पर करवा सके। इस संबंध में नारनौल विद्युत निगम के अधिशासी अभियंता शिवराज सिंह से बात की गई तो उन्होंने बताया कि कई बार सिस्टम की गलती के कारण व राउंड पूरे होने कारण ऐसा हो जाता है। इसलिए हमारे उपभोक्ता को पहले बिल में आई राशि 3545 रुपये ही जमा कराने होंगे।

नारनौल। मंदिर में खंडित मूर्ति।

कलवाड़ी के ठाकुर मंदिर की मूर्ति खंडित, ग्रामीणों में रोष

नारनौल। कलवाड़ी गांव के एक मंदिर की मूर्ति को अज्ञात लोगों ने खंडित कर दिया, जिसे देखकर ग्रामीण श्रद्धालुओं में रोष पनप गया। मंदिर कमेटी ने इस बाबत पुलिस में शिकायत दी है। कलवाड़ी निवासी कंवर सिंह ने बताया कि वह मंदिर ठाकुर जी की कमेटी का प्रधान है। उन्हें पता चला कि गांव में ठाकुर जी मंदिर की मूर्ति को किसी ने खंडित कर दिया, जिसकी जानकारी गांव के मौजिज लोगों को दी। इसके बाद मंदिर परिसर में एक पंचायत का आयोजन किया गया, जिसमें लोगों ने इस पर रोष जताया। पंचायत में ग्रामीणों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि इस बारे में प्रशासन को सूचना दी जानी चाहिए, जिसके बाद उन्होंने रिसीवर बीडीपीओ कनीना तथा पुलिस को इसकी सूचना दी।

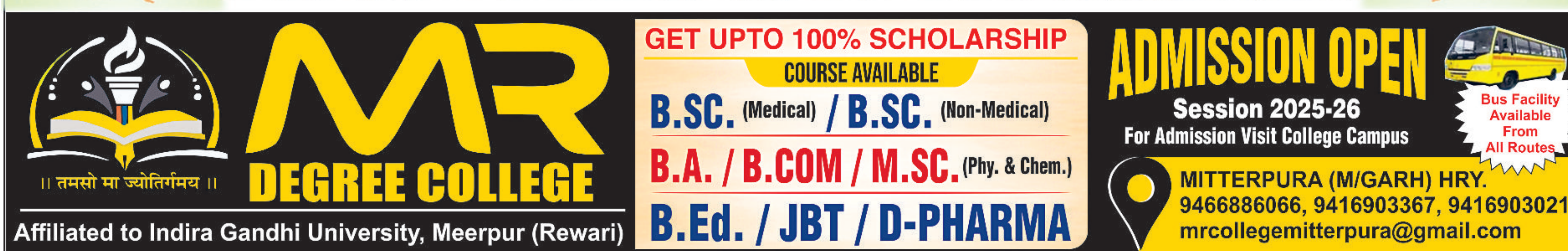

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, कई जन्मों की तपस्या के बाद माता पार्वती को इसी दिन भगवान शिव को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था। हरियाली तीज का पर्व भगवान शिव और माता पार्वती के पुनर्मिलन का उत्सव है। मान्यता है कि हरियाली तीज का व्रत करने से वैवाहिक जीवन में सुख–समृद्धि आती है।

यह उस दिन का प्रतीक है जब शिव ने पार्वती को उनकी लंबी तपस्या के बाद अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था, जो वैवाहिक भक्ति और प्रेम का प्रतीक है । यह त्यौहार मानसून के मौसम की शुरुआत के साथ भी आता है, जो प्रकृति की हरियाली और नवीनीकरण का जश्न मनाता है, यही कारण है कि इसे हरियाली तीज कहा जाता है।

शात्रों के विधान के अनुसार, उदय तिथि के अनुसार, हरियाली तीज का व्रत आज रविवार के दिन रखा जाएगा। इस दिन महिलाओं को हरे रंग के वस्त्र पहनने चाहिए और हरी चूड़ियां भी। हरियाली तीज के दिन माता पार्वती को सोलह श्रृंगार का सामान अर्पित करें और शादीशुदा महिलाएं खुद भी सोलह श्रृंगार करें।

यह त्यौहार पार्वती के अपने पति के प्रति अटूट समर्पण का प्रतीक है । जब भारतीय महिलाएँ तीज के दौरान उनका आशीर्वाद लेती हैं, तो वे ऐसा एक मजबूत वैवाहिक जीवन और एक उत्तम पति पाने के लिए करती हैं। तीज न केवल एक मजबूत वैवाहिक जीवन पर केंद्रित है, बल्कि यह बच्चों की खुशी और स्वास्थ्य पर भी केंद्रित है।

तीज एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है जो मुख्य रूप से भारत और नेपाल में मनाया जाता है। यह त्योहार देवी पार्वती और भगवान शिव के मिलन का प्रतीक है और विवाहित महिलाओं और अविवाहित लड़कियों द्वारा मनाया जाता है, जो पति की लंबी उम्र और सुख–समृद्धि की कामना करती हैं। जो अमावस्या के बाद तीसरे दिन को दर्शाता है।

इस पर्व का पौराणिक आधार माता पार्वती और

भगवान शिव के दिव्य मिलन से जुड़ा है। ऐसा माना जाता है कि माता पार्वती ने 108 बार जन्म लिया था और कठोर तप कर शिव जी को पति रूप में प्राप्त किया। हरियाली तीज का व्रत उसी तपस्या और समर्पण की स्मृति में रखा जाता है।

अंत में शिव जी माता पार्वती की तपस्या से प्रसन्न हुए और पार्वती को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। हरतालिका तीज का नाम पड़ने के पीछे भी यही कहानी जिम्मेदार है, हर का अर्थ होता है हरण और तालिका यानि सखी। क्योंकि पार्वती जी की सखियों ने उनका हरण किया था इसलिए हरतालि. का तीज नाम से यह तीज प्रसिद्ध हुई।

तीज पत्नी पार्वती और पति शिव के बीच संबंधों का प्रतिनिधित्व करती है। यह त्योहार पार्वती के अपने पति के प्रति अटूट समर्पण की याद दिलाता है। जब भारतीय महिलाएं तीज के दौरान अपने आशीर्वाद की तलाश करती हैं, तो वे एक मजबूत विवाह दृ और गुणवत्तापूर्ण पति प्राप्त करने के साधन के रूप में ऐसा करती हैं।

मान्यता है देवी पार्वती ने शिव जी को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी, जिससे प्रसन्न होकर भोलेनाथ सावन माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मां पर्वती से विवाह के लिए तैयार हुए थे. इसलिए हर साल हरियाली तीज के दिन कुंआरी लड़कियां मनचाहे वर के लिए और विवाहित स्त्रियां पति की लंबी आयु के लिए व्रत करती हैं।

हरियाली तीज, जिसे श्रावणी तीज भी कहा जाता है, भगवान शिव और देवी पार्वती के मिलन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस दिन, सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य के लिए व्रत रखती हैं और शिव–पार्वती की पूजा करती हैं। पौराणिक कथा के अनुसार, देवी पार्वती ने भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी, और उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था।

हरतालिका तीज के दिन भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा–अर्चना करने से कुंवारी लड़कियों के जल्द विवाह के योग बनते हैं। वहीं, सुहागिन महिलाओं के द्वारा हरतालिका तीज व्रत करने से अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है और पति को दीर्घ आयु का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

पूरे दिन व्रत रहने के बाद शाम के समय 16 श्रृंगार करके सबसे घर के ईशान कोण में एक चौकी पर पीले रंग का कपड़ा बिछाएं और उस पर शिव और पार्वती का चित्र अथवा मूर्ति स्थापित करें. इसके बाद भगवान श्री गणेश का ध्यान करें और अपनी पूजा और व्रत को सफल करने की कामना करें।

बुलेट ट्रेन के बाद अब आ रहा

हाइएस्ट स्पीड वाला बुलेट इंटरनेट

करीब साठ साल पहले दुनिया की पहली बुलेट ट्रेन बनाने वाले देश जापान ने अब बुलेट स्पीड वाले इंटरनेट को बनाने में सफलता हासिल की है। इस नई तकनीक से अविश्वसनीय तेज गति से डाटा ट्रांसफर हो सकेगा। इस नई तकनीक की क्या हैं विशेषताएं, इससे क्या होंगे भविष्य में फायदे, इनके बारे में आप भी डिटेल में जरूर जानना चाहेंगे।

{ कवर स्टोरी/ सुनील कुमार महला }

हाल ही में जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशंस टेक्नोलॉजी (एनआईसीटी) के रिसर्चर्स ने 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड की अविश्वसनीय इंटरनेट स्पीड हासिल करके विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। जापान के एनआईसीटी ने सुमितोमो इलेक्ट्रिक और यूरोपीय पार्टनर के साथ मिलकर यह उपलब्धि हासिल की है। उनके यूनिक 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर केबल ने अविश्वसनीय स्पीड से डाटा ट्रांसमिट किया।

अविश्वसनीय है इसकी स्पीड

एक रिपोर्ट के अनुसार, नई तकनीक के द्वारा 1.02 मिलियन गीगाबाइट (जीबी) डाटा एक सेकेंड में डाउनलोड किया गया। यह स्पीड इतनी ज्यादा है कि इसके बारे में सोच पाना भी मुश्किल है। जापान की इस तकनीक को वैश्विक रूप से डाटा ट्रांसफर, स्ट्रीमिंग और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में एक उज्ज्वल भविष्य के रूप में देखा जा रहा है। बताते चलें कि जापान की इस लेटेस्ट इंटरनेट नेटवर्क की स्पीड 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह करीब 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के बराबर है। यह इंटरनेट स्पीड इतनी फास्ट है कि इस स्पीड का इस्तेमाल करके कुछ ही सेकेंड्स में फिल्म ही नहीं, बल्कि पूरी की पूरी लाइब्रेरी तक डाउनलोड की जा सकती है। वास्तव में जापान की यह उपलब्धि डेटा ट्रांसमिशन तकनीक में एक महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम है। जापान की यह स्पीड अमेरिका की वर्तमान इंटरनेट डाटा एवरेज इंटरनेट स्पीड से 3.5 मिलियन गुना अधिक है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह स्पीड अमेरिका के औसत इंटरनेट कनेक्शन से 35 लाख गुना ज्यादा है। भारत की औसत इंटरनेट गति से यह 1.6 करोड़ गुना तेज बताई जा रही है। रिसर्चर्स के अनुसार इतनी स्पीड से एक साथ 1 करोड़ 8 हजार वीडियो स्ट्रीम किए जा सकते हैं। यानी 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के हिसाब से यह स्पीड मिलेगी, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। जापान द्वारा हाइ स्पीड इंटरनेट तकनीक का विकास, आने वाले समय में 6जी नेटवर्क, क्लाउड सिस्टम्स, अंडरसी डेटा केबल्स और एआई जैसे उभरते क्षेत्रों में नई क्रांति लेकर आएगा।

नई तकनीक का किया इस्तेमाल

जापान ने सिंगल कोर के बजाय 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर सिस्टम और उन्नत एंप्लीफायर तकनीक की मदद से इतनी तेज इंटरनेट स्पीड को हासिल करने में सफलता हासिल की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन स्पेशल केबल का इस्तेमाल कर शोधकर्ताओं की टीम ने बिना किसी स्पीड लॉस के 1800 किलोमीटर से भी अधिक की दूरी तक भारी मात्रा में डेटा भेजने में सफलता पाई। उन्होंने ट्रांसमीटर, रिसीवर और लूपिंग सर्किट के सेटअप का उपयोग किया, जिससे डेटा फुल पॉवर से फ्लो रखने में मदद मिली। इस ऐतिहासिक उपलब्धि का अर्थ है कि एक सेकेंड में 10,000 से अधिक फिल्में डाउनलोड की जा सकती हैं। गौरतलब है कि मार्च 2024 में भी जापान ने ही 402 टेराबिट्स प्रति सेकेंड (यानी 50,250 जीबीपीएस) की स्पीड का रिकॉर्ड बनाया था। लेकिन इस बार नई तकनीक ने इस आंकड़े को दोगुना से अधिक कर दिया।

कई सेक्टर्स को मिलेगा लाभ

कहना गलत नहीं होगा कि जैसे-जैसे एआइ, 8के स्ट्रीमिंग, क्लाउड गेमिंग और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसे सेक्टर आगे बढ़ेंगे, ऐसे ब्रेकथ्रू तकनीकों की जरूरत और भी बढ़ेगी। वास्तव में यह तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, एआइ, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, आइओटी और ग्लोबल डिजिटलीकरण की बढ़ती मांगों को पूरा करने में मदद करेगी। ज्यादा तेज इंटरनेट, ज्यादा तेज विकास भी लेकर आएगा। स्मार्ट सिटी, रिमोट हेल्थ केयर और ऑनलाइन शिक्षा जैसे क्षेत्रों में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

जापान ने सिद्ध की श्रेष्ठता

बताते चलें कि दुबई, इंटरनेट की स्पीड के मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर, हॉन्ग कॉन्ग तीसरे नंबर पर, फ्रांस चौथे नंबर पर और आइसलैंड पांचवें नंबर पर आता है। कहना गलत नहीं होगा कि जापान ने अपने तकनीकी नवाचार से ग्लोबल डिजिटल डिफरेंस को भी उजागर किया है। आज एआइ का दौर है। दुनिया में ज्यादातर काम-काज इंटरनेट तकनीक से किए जा रहे हैं। आने वाले समय में इंटरनेट और तकनीक का उपयोग निश्चित ही अधिक बढ़ेगा। ऐसे में जापान की इंटरनेट स्पीड से जापान के साथ ही साथ दुनिया के अन्य देशों को भी इसके लाभ मिल सकेंगे। आने वाले समय में एआई, 6जी नेटवर्क, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी उभरती तकनीकों के लिए अत्यधिक डाटा ट्रांसमिशन की जरूरत होगी। जापान की यह तकनीक इन जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हालांकि यह तकनीक अभी प्रयोगशाला तक ही सीमित है और इसे आम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाने में वक्त लगेगा। लेकिन भविष्य की इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिहाज से यह एक मजबूत नींव तो रखती ही है।

हमें भी करने होंगे प्रयास

जापान की यह उपलब्धि हमें भी अपनी इंटरनेट गति को बढ़ाने की जरूरत की याद दिलाती है। गौरतलब है कि इंटरनेट की स्पीड के मामले में भारत टॉप 10 देशों में भी शामिल नहीं है। यहां पर मोबाइल इंटरनेट स्पीड 100.78 एमबीपीएस है, जबकि एवरेज ब्रॉडबैंड स्पीड 63.55 एमबीपीएस है। वास्तव में यह स्पीड विश्व के बाकी देशों के मुकाबले काफी कम है। आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उतनी इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है, जितनी होनी चाहिए। आज भी भारतीय ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी और 5जी नेटवर्क का विस्तार काफी चुनौतियों से भरा है। आज भारत लगातार डिजिटाइजेशन की ओर बढ़ रहा है। इंटरनेट ही शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक विकास के लिए नए अवसर खोल सकता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने से अनेक प्रकार के अवसर देश में पैदा होंगे। इंटरनेट स्पीड बढ़ेगी तो डिजिटल इंडिया को गति मिलेगी और डिजिटल इंडिया से रोजगार के अवसर बढ़ने, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने और बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण होगा। इसके लिए आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाएं। *

यंगस्टर्स को सर्वाधिक अट्रैक्ट करते हैं

देश के टॉप करियर मैगनेट सिटीज

प्राइवेट सेक्टर में अगर देश के टॉप करियर मैग्नेट सिटीज की बात करें तो बेंगलुरु, हैदराबाद और चेन्नई सबसे आगे हैं। इनके अलावा कुछ और शहर भी आगे बढ़ रहे हैं। वर्तमान समय और भविष्य के जॉब के लिहाज से हॉट सिटीज पर एक नजर।

{ जॉब ट्रेंड / कीर्तिशेखर }

करियर और लगातार ग्रोथ करने के लिहाज से इस समय भारत का सबसे अच्छा शहर बेंगलुरु को माना जाता है। सैलरी के मामले में भी इस समय देश के टॉप पांच शहरों में सबसे पहला नंबर बेंगलुरु का ही है और आने वाले अगले पांच सालों तक बेंगलुरु, हैदराबाद, मुंबई, अहमदाबाद, पुणे, चेन्नई और गुरुग्राम यही टॉप करियर शहर होंगे। अगले पांच सालों तक भी भारत के इन्हीं शहरों में सबसे अच्छा भविष्य तलाशने वाले युवक आकर्षित होंगे।

हाई सैलरी देने वाले शहर: 'जॉब्स एंड सैलेरीज प्राइमर फाइनेंशियल ईयर-2024' टीम लीज के हिसाब से बेंगलुरु शहर में औसत समग्र मासिक वेतन 29,500 रुपए है, जो कि देश के बाकी सभी महानगरों के मुकाबले 8 से 15 फीसदी ज्यादा है। इस मामले में एक अखबार ने भी हाल के दिनों में सैलरी और करियर के भविष्य के लिहाज से एक सर्वे किया, रेस फॉर टैलेंट। इस सर्वे में भी बेंगलुरु जूनियर, मिड और सीनियर यानी तीनों ही वेतन श्रेणियों में क्रमशः रुपए 7.2 लाख, रुपए 20.4 लाख और रुपए 37.2 लाख के औसत से शेष सभी भारतीय शहरों में शीर्ष पर है। रैंडस्टैड 2025 रिपोर्ट बताती है कि यहां जूनियर भूमिकाओं का सैलरी पैकेज देश के दूसरे सभी बड़े शहरों के मुकाबले 23 पर्सेंट तक ज्यादा है और मिड लेबल में यह 9 फीसदी ज्यादा है।

ये सिटीज भी बढ़ रहे हैं आगे: एक नए सर्वे (इनडीड) के मुताबिक यह बात भी सामने आ रही है कि हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत तेजी से अगले पांच सालों में सैलरी देने के मामले में देश के टॉप शहर बनने का मुकाबला करेंगे। लेकिन अभी तक ज्यादातर अनुमान यही है कि 2030 तक यह सेहरा बेंगलुरु के सिर पर ही रहेगा। हैदराबाद और चेन्नई के बाद जो तीसरा शहर इस मामले में चौंकाने वाली रफ्तार से, विशेषकर सैलरी के मामले में आगे बढ़कर आ रहा है, यह न तो दिल्ली है, न मुंबई, यह अहमदाबाद है। इसकी हाल के सालों में सैलरी ग्रोथ, दूसरे मेट्रो सिटीज के मुकाबले 20 से 25 फीसदी ज्यादा रही है। हालांकि सर्वे से निकला डाटा कोई तथ्य नहीं होता, जिसके आधार पर माना जाए कि यह बात सौ फीसदी सही है। यह भी एक अनुमान ही है, क्योंकि जहां दूसरे कई डाटा बेंगलुरु को सैलरी के लिहाज से देश का टॉप शहर बता रहे हैं, वहीं इनडीड यह तमगा चेन्नई को दे रहा है।

इसलिए बेंगलुरु है सबसे आगे: बेंगलुरु इस समय ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) हब बन चुका है। भारत के 40 फीसदी से ज्यादा जीसीसी बेंगलुरु में ही हैं। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, गोल्डमैन सैक्स जैसी 250 से ज्यादा बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपने मुख्य कार्यकारी दफ्तरों के साथ बेंगलुरु में मौजूद हैं। यही नहीं ये तमाम कंपनियां अपना आरएंडडी (रिसर्च एंड डेवलपमेंट) सेंटर भी यही चलाती हैं। यहीं से नए उत्पादों और नवाचारों को बाजार में उतारती हैं। इसी तरह बेंगलुरु इस समय देश का स्टार्टअप और डीप टेक इकोसिस्टम का भी हब है। 44 फीसदी भारतीय यूनिकॉर्न बेंगलुरु में ही स्थित हैं या यहीं से निकले हैं। एआई, सेमिकंडक्टर और एयरोस्पेस केंद्रित स्टार्टअप बेंगलुरु में ही हैं और इन्हीं की बदौलत यह शहर वेतन प्रतिस्पर्धा में देश के दूसरे महानगरों के मुकाबले बहुत ऊपर है। बेंगलुरु में टैलेंट क्लस्टर बन चुका है, साथ ही यहां एक नई तरह की टैलेंट ओरिएंटेड जीवनशैली विकसित हो रही है। इस शहर में 20 लाख से ज्यादा आईटी पेशेवर कार्यरत हैं तथा ये दुनिया के गिने चुने उन शहरों में से एक बन चुका है, जो विश्व स्तरीय को-वर्किंग स्पेस मुहैय्या कराते हैं।

हैदराबाद भी है मुकाबले में: हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत पीछे नहीं है। पिछले कुछ सालों में हैदराबाद ने फिर से तेज छलांग लगाई है और विभिन्न सर्वेक्षणों में भले वह अभी बेंगलुरु से थोड़ा नीचे हो, लेकिन माना जाता है कि अगले दो सालों में यानी 2027 तक हैदराबाद नौकरियां उपलब्ध कराने के मामले में बेंगलुरु को भी पीछे छोड़ सकता है। सिर्फ नौकरियां ही हैदराबाद में ज्यादा नहीं पैदा होंगी बल्कि आने वाले दिनों में अनुमान है कि यहां वेतन वृद्धि भी देश के दूसरे शहरों में सबसे ज्यादा होगी। हैदराबाद में वेतन वृद्धि का सबसे तेज रिकॉर्ड पहले रह चुका है और फिर से यह उसी दिशा में आगे बढ़ता लग रहा है। *

{ टेक्नोलाइफ/ लोकमित्र गौतम }

हाल के वर्षों में अंजान लोगों से मिलने, दोस्ती या लव रिलेशन बनाने में डेटिंग एप्स का यंगस्टर्स खूब यूज कर रहे हैं। इनकी पॉपुलैरिटी बढ़ने की वजह, इनके पॉजिटिव-नेगेटिव आस्पेक्ट्स के बारे में जानिए।

डेटिंग एप्स मिलने-मिलाने के नए ठिकाने

आज के दौर में मॉडर्न डेटिंग एप्स, संबंधों की दुनिया में अहम असर डाल रहे हैं। इस 21वीं सदी के दूसरे दशक में दुनिया में रिश्तों के निर्माण की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन आया है। प्रेम पत्रों, पारिवारिक मेल-मिलापों और सामाजिक मेलों की जगह अब मोबाइल स्क्रीन और तरह-तरह के एप्स ने ले ली है। टिंडर, बंबल, हिंज, ओके कुपिड जैसे मॉडर्न डेटिंग एप्स ने आज रिश्तों की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। ये तकनीकी बदलाव सिर्फ अमेरिका या यूरोप तक ही सीमित नहीं हैं, भारत भी पूरी तरह से इनकी चपेट में है, जहां सदियों पुरानी सांस्कृतिक विविधता और जीवन जीने की मजबूत व्यवस्था रही है। लेकिन आज डेटिंग एप्स ने रिश्तों की पारंपरिक दुनिया को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है।

जुड़े हैं करोड़ों यंगस्टर्स: आज दुनिया भर में लगभग 37 करोड़ लोग, जिनमें सबसे बड़ी तादाद युवाओं की है, विभिन्न तरह के डेटिंग एप्स से जुड़े हुए हैं। डेटिंग एप्स का किस कदर चलन बढ़ा है, इसका अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि आज अमेरिका में 30 फीसदी वयस्क लोग किसी न किसी डेटिंग एप का हिस्सा हैं। इन एप्स की शुरुआत तो दो अजनबियों के बीच प्रेम संबंध विकसित कराने के लिए एक मध्यस्थ के रूप में हुई थी, लेकिन आज तरह-तरह के डेटिंग एप्स दोस्ती, कैजुअल मीटिंग, विवाह के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

सबसे पॉपुलर डेटिंग एप्स: दुनियाभर में जिस डेटिंग एप की धूम है, उसका नाम टिंडर है। सौ से ज्यादा देशों में सक्रिय इस एप के अप्रैल 2025 तक साढ़े सात करोड़ रजिस्ट्र्ड उपयोगकर्ता थे। दूसरे नंबर पर बंबल है, जो विशेष तौर पर महिलाओं को ध्यान में रखकर डेवलप किया गया है, क्योंकि इस एप में महिलाओं को रिश्ता आगे बढ़ाने के लिए पहला कदम रखने की आजादी है। यह एप किसी पुरुष को किसी महिला से संबंध जोड़ने के लिए निर्णय लेने की आजादी नहीं देता। इस एप में सिर्फ महिलाएं ही किसी के साथ को स्वीकार कर सकती हैं या उसे अस्वीकार कर सकती हैं। एक तीसरा पॉपुलर एप हिंज है, जो टेकलाइन के साथ गंभीर रिश्ते विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसके अलावा और लाखों सब्सक्राइबर की क्षमता रखने वाले एप्स हैं, उनमें- ओके कुपिड, ग्रिंडर और प्लेंटी ऑफ फिश डेटिंग एप्स हैं। ये सारे रिश्ते बनाने वाले एप्स अलग-अलग उम्र समूह को ध्यान में रख कर डिजाइन किए गए हैं।

इसलिए बढ़ रही पॉपुलैरिटी: डेटिंग एप्स की लोकप्रियता इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि इनमें सुरक्षा और गोपनीयता की पुख्ता व्यवस्था होती है। इनमें एक एल्गोरिद्म की गुणवत्ता होती है, चाहे मैचिंग सही हो या न सही हो। लेकिन आमतौर पर एक ही एल्गोरिद्म के लोग इनके जरिए आपस में मिलते हैं। इनकी लोकप्रियता का एक और बड़ा कारण यह है कि इन्हें रीजनल या स्थानीय भाषाओं का सपोर्ट सिस्टम भी हासिल है और सबसे बड़ी बात, इनमें एक खास किस्म का यूजर इंटरफेस होता है, जो इसको वास्तविक माहौल का आभास देता है।

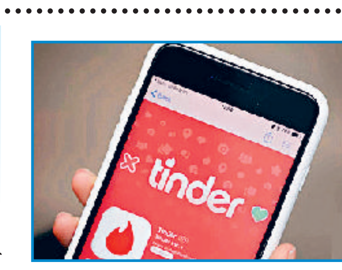

पड़ रहा है रिश्तों पर असर: इन मॉडर्न एप्स का हमारे जीवन और रिश्तों की संवदेनशीलता पर भी असर पड़ा है। निश्चित रूप से इनके चलते अब दो युवा लोगों को आपस में मिलना आसान और सुरक्षित हो गया है। पहले कुछ गिने-चुने सौभाग्यशाली लोग ही होते थे, जिनके जीवन में प्यार, मोहब्बत की जगह होती थी। लेकिन इन डेटिंग एप्स के चलते अब कोई भी अपने अनुकूल दोस्ती के लिए साथी की तलाश कर सकता है।

नेगेटिव पहलू भी हैं मौजूद: हालांकि इन एप्स में सब कुछ अच्छा अच्छा ही नहीं है। इनके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। मसलन एप्स की दोस्ती या प्रेम में कमिटमेंट जैसी कोई चीज नहीं होती। बड़ी तादाद में लोग अपनी झूठी और नकली प्रोफाइल बनाकर एक-दूसरे से संपर्क साधते हैं और इस तरह कई तरह के अपराधों को अंजाम देते हैं। *

{ छोटी कहानी
गोविंद भारद्वाज }

कई वर्ष बाद गोपाल अपने गांव लौटा था। वहां उसकी मुलाकात अपने बचपन के दोस्त रामू से हुई। उसका कटा हाथ देखकर गोपाल को बहुत दुख हुआ। लेकिन रामू को अपने दुख से ज्यादा आत्मग्लानि महसूस हुई।

दिव्यांग

बरसों बाद गांव जाने का मौका मिला। तांगा स्टैंड अब टैंपो स्टैंड में बदल चुका था। टैंपो से उतरते ही अपने नाम की आवाज कानों में पड़ी, 'गोपाल...!' मैंने पलट कर देखा। सामने एक चाय की गुमटी थी, जो धुएं में बिल्कुल काली दिखाई दे रही थी। मैंने टैंपो वाले को बीस का नोट दिया और उस दुकान की तरफ बढ़ गया। 'आ भई...आ.. बहुत दिनों बाद गांव की याद आई तुझे।' उसने मुझे दुकान के अंदर बुलाते हुए कहा। मैंने उससे हाथ मिलाने के लिए अपना दायां हाथ आगे बढ़ाया। उसने हाथ तो अपना बढ़ाया, लेकिन दायां नहीं बायां। मेरी नजर उसके दाएं कंधे की ओर गई। मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई। 'यह क्या हुआ रामू?' मेरे मुंह से निकला। 'भाई गोपाल, मुझे माफ कर दे...।' रामू की आंखें नम हो आईं। 'किस बात की माफी भाई...?' मैंने उसके बाएं हाथ को पकड़ते हुए पूछा। 'दोस्त, तू मुझे जी भर कर लूला (हाथ से दिव्यांग) कह सकता है...।' वह रुआंसा हो गया। मैं समझ गया था, वह क्या कहना चाह रहा है? मैं अतीत में चला गया। बात उन दिनों की है, जब मैं गांव में रहा करता था। मेरी मित्र मंडली में यूं तो बहुत से दोस्त थे। सबके सब मुझे प्यार से गोपाल कह कर बुलाते थे, लेकिन रामू एक ऐसा दोस्त था, जो मुझे लंगड़ा (पैर से दिव्यांग) कह कर बुलाता था। दरअसल, मैं

जब छह महीने का था, तब मेरे बाएं कूल्हे पर एक फोड़ा हो गया था, जो बाद में नासूर बन गया था। उसी के चलते मेरा बायां पैर खराब हो गया। मैं हमेशा के लिए दिव्यांगता की श्रेणी में आ गया।

गांव से चार किलोमीटर दूर दूसरे गांव में सीनियर हायर सेकेंडरी स्कूल था। वहां हम सब दोस्त मिलकर नौवीं-दसवीं कक्षा में पढ़ते थे। तब रामू सबके सामने मुझे लंगड़ा कह कर ही पुकारता था। अन्य दोस्त उसको खूब समझाते कि गोपाल को 'लंगड़ा' मत बुलाया कर, लेकिन वह था कि मानता नहीं था। स्कूल के शिक्षक भी उसे इस बात के लिए डांटते, लेकिन वह अपनी आदत से बाज नहीं आता।

एक दिन तो तब हद हो गई, जब उसने प्रिंसिपल साहब के सामने ही मुझे लंगड़ा कह दिया। उन्हें उसकी यह बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने उसे पीटा भी। प्रिंसिपल साहब की पिटाई से तो वह और ज्यादा खफा हो गया। अब वह मुझे जब देखो तब लंगड़ा-लंगड़ा कहकर चिढ़ाने लगा। मेरी भी आदत सी हो गई थी, लंगड़ा सुनने की। मैं कभी नहीं चिढ़ता था। लेकिन दूसरों को उसका लंगड़ा कहकर बुलाना अच्छा नहीं लगता था। दसवीं पास करने के बाद मैं आगे की पढ़ाई के लिए शहर चला आया। एमए अंतिम वर्ष के इम्तिहान खत्म हो चुके थे। इसलिए मैंने सोचा क्यों न गांव जाकर पुराने मित्रों से मिला जाए।

'क्या हुआ कहां खो गया गोपाल ...?' रामू ने मेरे हाथ को झटका देते हुए पूछा। 'कुछ नहीं यार, मैं अपने बचपन में खो गया था। खैर बता तेरे दांए हाथ को क्या हुआ?' मैंने पास में पड़े स्टूल पर बैठते हुए पूछा। 'मत पूछ... जैसी करनी वैसी भरनी...। मैंने तुझे कभी तेरे नाम से नहीं बुलाया... तुझे लंगड़ा ही कहा। अब तू मुझे लूला कह सकता है।' उसने भर्राई आवाज में कहा।

'छोड़ यार पुरानी बातों को...तू मेरे लिए रामू है... और रामू ही रहेगा... पर तुमने बताया नहीं यह सब कैसे हुआ?' मैंने पूछा।

रामू चाय का कप मेरे हाथ में थमाते हुए बोला, 'दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद मैं अपने पिताजी के साथ खेती करने लगा। दो साल पहले गेहूं निकालने के लिए खेत में थ्रेसर (अनाज निकालने की मशीन) लगा हुआ था। देर रात तक थ्रेसर पर खड़े रहने की वजह से नींद की झपकी आ गई। मेरा दायां हाथ मशीन में आ गया। जब मुझे होश आया तब मैं अस्पताल में भर्ती था। मेरा दायां हाथ कट चुका था।' 'फिर यह दुकान?' मैंने पूछा।

'दुर्घटना के लगभग एक साल बाद पिताजी ने मेरी छोटी-सी दुकान खुलवा दी। बस यहीं से थोड़ा बहुत कमाकर अपना गुजारा कर लेता हूं ... तू बता क्या कर रहा है आजकल?' उसने अपनी बात खत्म करते ही पूछा। मैंने बताया, 'एमए का इम्तिहान दिया है। आगे प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने की सोच रहा हूं। मेरा लक्ष्य यही है आईएएस बनूं।' मैं उठ कर चलने लगा तो रामू मेरे गले लग गया, बोला, 'गोपाल, अपने दोस्त को माफ तो कर दिया ना...।' मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'रामू मैं तेरे लिए तो अभी भी लंगड़ा ही हूं... तेरे मुंह से गोपाल अच्छा नहीं लगता।' *

प्रेमचंद की धरोहर कहानियां

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

आगामी 31 जुलाई को कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 145वीं जयंती मनाई जाएगी। उनके जाने के लगभग नौ दशक गुजर जाने के बाद आज भी उनका कथा साहित्य अगर प्रासंगिक बना हुआ है तो ऐसा उनकी गहन दृष्टि और सामाजिक-राष्ट्रीय सरोकार से प्रतिबद्धता के कारण ही संभव हुआ है। हाल में प्रकाशित होकर आईं ख्यात आलोचक-संपादक पल्लव के संपादन में दो पुस्तकें 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' और 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' इस बात को और प्रमाणित करती हैं। 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' पुस्तक में संकलित 15 कहानियां आजादी से पहले के भारतीय समाज में धंसी हुई जातिगत मानसिकता को न केवल उजागर करती हैं, बल्कि उस दौर की सामाजिक कुरूपता को भी कठघरे में खड़ा करती हैं। 'सद्गति, ठाकुर का कुआं, कफन, जुरमाना, मंदिर' और 'दूध का दाम' जैसी कहानियां उस काल के सामाजिक विद्रूप को अनावृत करने के साथ आज भी याद आ जाती हैं, जब इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने के बाद भी जाति आधारित भेदभाव से उपजी घटनाएं हमारे समाज में घटित होती हैं।

दूसरी पुस्तक 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' में सोलह ऐसी कहानियां चयनित की गई हैं, जिनमें स्वाधीनता से पहले के भारतीय जनमानस में व्याप्त आजाद होने की आकुलता नजर आती है। इस पुस्तक में संकलित 'सुहाग की साड़ी, जुलूस, बौड़म' और 'शतरंज के खिलाड़ी' आदि कहानियां इस बात को प्रमाणित करती हैं कि पराधीन भारत के आमजन में आजाद होने की कैसी उत्कंठा थी। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसक आंदोलन के प्रति प्रेमचंद के मन में कितनी निष्ठा थी, इस बात को भी ये कहानियां प्रमाणित करती हैं। ये दोनों पुस्तकें शोधार्थियों के लिए तो उपयोगी होंगी ही, प्रेमचंद के वैचारिक वैशिष्ट्य और सरोकारों को भी समझने में सहायक सिद्ध होंगी। *

पुस्तकें: प्रेमचंद की दलित कथाएं और प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं,
संपादक: पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए (प्रत्येक), **प्रकाशक:** राजपाल एंड संस, दिल्ली

अमेरिकन रेन डांस

बन बंग फाई, थाईलैंड

वर्षा के लिए प्रार्थना करते तिब्बती बौद्ध भिक्षु

वोडू वर्षा नृत्य, हैती

इन दिनों अपने देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून सक्रिय है, खूब बारिश हो रही है। लेकिन कई बार समय पर बारिश नहीं होती है। देश, दुनिया के कई हिस्सों में बारिश न होने पर उसके आह्वान को लेकर कई परंपराएं प्रचलित हैं। यहां बता रहे हैं कुछ ऐसी ही अजब-अनूठी परंपराओं के बारे में।

बहुत अजब-अनोखी हैं
दुनिया में बारिश के आह्वान की रस्में

ट्रेडिशंस
शिखर चंद जैन

एक तरफ जहां अतिवृष्टि वाले क्षेत्रों में लोग भगवान से बारिश रोकने की प्रार्थना करते हैं, वहीं बारिश की कमी वाले दुनिया के कई देशों में लोग बारिश के लिए बादलों, देवताओं और ईश्वरीय शक्तियों का आह्वान करते हैं। इसके लिए तरह-तरह की धार्मिक रीतियों का पालन करते हैं।

अमेरिकी जनजातियों का वर्षा नृत्य: अमेरिका के मैदानी हिस्सों में रहने वाली कई जनजातियों के लोग वर्षा नृत्य करते हैं। यह वर्षा के आह्वान का प्राचीन अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान में पारंपरिक पोशाक और पंखों वाले मुकुट या टोपी पहन कर, हाथों में चील के पंख लिए, घंटों तक एक घेरे में गाना, ढोल बजाना और नृत्य करना शामिल है। ऐसा माना जाता है कि वर्षा नृत्य से वर्षा के देवता खुश होकर वर्षा करते हैं।

बन बंग फाई (रॉकेट महोत्सव): थाईलैंड के इसान रीजन और उत्तर-पूर्वी थाईलैंड के कुछ इलाकों में हर वर्ष जून महीने में यह अनोखा रॉकेट त्योहार खेती के मौसम से ठीक पहले मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान ग्रामीण लोग और भिक्षु, बांस या लोहे के पाइप से रॉकेट बनाने के लिए एकत्रित होते हैं। इस उत्सव में मंदिर या आस-पास के अन्य इलाकों के चारों ओर एक जुलूस निकाला जाता है, जिसके बाद लोग आकाश में रॉकेट छोड़ते हैं। यह क्रिया 'फ्राया थाएन' नामक देवता को अर्पित की जाती है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे मौसम के अनुसार बारिश का होना सुनिश्चित करते हैं।

आदिवासी लोगों का मेंढक नृत्य: ऑस्ट्रेलिया देश के आदिवासी, हजारों सालों से मेंढक नृत्य करते आ रहे हैं। यह नृत्य शुष्क मौसम में किया जाता है, जब मेंढक शांत होते हैं। यह मेंढकों को जगाने और बारिश के आह्वान के लिए किया जाता है। इस नृत्य में मेंढकों की गतिविधियों की नकल करना, मेंढक जैसी आवाजें निकालना, शरीर पर रंग, जानवरों की खाल पहनना, भाले और बूमरैंग लेकर चलना शामिल होता है।

नांग मेव समारोह: थाईलैंड में ही बन बंग फाई के अलावा, थाई किसानों द्वारा देश के मध्य और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में वर्षा के आह्वान के

नांग मेव समारोह, थाईलैंड

लिए नांग मेव समारोह भी मनाया जाता है। जब बुवाई का मौसम आता है, तो किसान अपने गांवों या मंदिरों में नांग मेव (बिल्ली) की परेड निकालते हैं, इस उम्मीद में कि जब बारिश की सबसे ज्यादा जरूरत हो, तब बारिश हो। ऐसा माना जाता है कि बिल्लियां बारिश से डरती हैं और अगर इस समारोह के दौरान कोई बिल्ली रोती है, तो इसका मतलब माना जाता है कि बारिश होने वाली है।

केबो-केबोआन: इंडोनेशिया में केबो-केबोआन पारंपरिक समारोह मनाया जाता है। यह पूर्वी जावा के अलियान और अलस्मलांग गांवों में बान्यूवांगी लोगों द्वारा सदियों से मनाया जाता रहा है। यह समारोह बारिश, अच्छी फसल और शुष्क मौसम में आपदाओं से सुरक्षा की प्रार्थना के लिए किया जाता है। ग्रामीणों का मानना है कि इस परंपरा का पालन ईश्वर की कृपा के प्रति उनकी कृतज्ञता का प्रतीक है और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए पूर्वजों की आत्माओं का आह्वान करता है। भैंसों को इस पारंपरिक समारोह का मुख्य प्रतीक माना जाता है क्योंकि वे किसानों की गतिविधियों और चावल के खेती से गहराई से जुड़े होते हैं। समारोह के दौरान, लोग भैंसों (केबो) की वेशभूषा धारण करते हैं और उनकी भूमिका निभाते हैं, क्योंकि इसमें कोई वास्तविक जानवर शामिल नहीं होता। समारोह की शुरुआत प्रार्थना और टुम्पेंग नामक व्यंजन खाने से होती है। टुम्पेंग, जीवन चक्र के प्रतीक माने जाने वाले, चावल के 12 शंकु के आकार के ढेरों से बना एक व्यंजन होता है।

भिक्षुओं द्वारा मंत्रोच्चार: जब भी सूखा पड़ता है या समय पर बारिश नहीं होती है तो तिब्बती भिक्षु, आकाश और जल के देवी-देवताओं से प्राचीन मंत्रों और प्रार्थनाओं का जाप शुरू कर देते हैं। भिक्षुओं का मानना है कि उनके जाप से वातावरण शुद्ध होता है और वर्षा के लिए आवश्यक परिस्थितियां बनती हैं। यह जाप अकसर पर्वत शिखरों पर किया जाता है।

वोडू वर्षा नृत्य: हैती के लोगों में बारिश बुलाने का अनुष्ठान वोडू वर्षा नृत्य कहलाता है। यह सूखे के दौरान किया जाने वाला एक अनोखा नृत्य है। इसके जरिए कलाकार वोडू धर्म की पवित्र आत्माओं (लोआ) को बारिश के लिए आमंत्रित करते हैं। *

भारत में वर्षा संबंधी विभिन्न समारोह

वरुण यज्ञ अनुष्ठान: वरुण यज्ञ अनुष्ठान, वैदिक हिंदू वर्षा आह्वान अनुष्ठान है। यह आज भी भारत के कई हिस्सों में किया जाता है। यह अनुष्ठान सनातन धर्म में जल के देवता वरुण को समर्पित है। इसमें मंत्रोच्चार, अग्नि में आहुति देना और वर्षा हेतु प्रार्थनाएं शामिल होती हैं। यह अनुष्ठान आमतौर पर मानसून के मौसम में उन क्षेत्रों में किया जाता है, जहां बरसात की कमी होती है।

अभिषेकम अनुष्ठान: दक्षिण भारत के किसान विशेष रूप से यह वर्षा-आह्वान अनुष्ठान अपनी उपज बढ़ाने के लिए, वर्षा की प्रार्थना हेतु करते हैं। यह अनुष्ठान हिंदू धर्म में वर्षा के देवता, भगवान इंद्र को समर्पित है। इसमें उनकी मूर्ति पर जल और दूध चढ़ाया जाता है। इसका उद्देश्य वर्षा के देवताओं को प्रसन्न करना और वर्षा लाना है। यह आमतौर पर गर्मी के महीनों में किया जाता है, जब वर्षा कम होती है।

मेंढकों का विवाह: देश के कई हिस्सों, विशेष रूप से उत्तर, मध्य-पश्चिमी राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़ आदि के ग्रामीण और कई आदिवासी इलाकों में मान्यता है कि बारिश न होने पर अगर सामूहिक तौर पर मेंढक-मेंढकी का विवाह करवा दिया जाए तो बारिश होती है।

बढ़ती महंगाई के दौर में किसी एक नौकरी पर पूरी तरह निर्भर रहने के बजाय अगर आप पोर्टफोलियो करियर चॉइस अपनाते हैं, तो इससे आपके करियर ग्रोथ और इनकम के कई रास्ते खुल सकते हैं। पोर्टफोलियो करियर, इसके ऑप्शंस और बेनिफिट्स के बारे में जानिए।

आज के दौर की जरूरत है
पोर्टफोलियो करियर

प्रोफेशनल लाइफ / अंजू जैन

एक जमाना था जब लोग बड़े गर्व से बताते थे कि उन्होंने किसी एक ही बिजनेस फर्म या बड़ी कंपनी में नौकरी शुरू की और 35-40 साल तक काम करके वहीं से रिटायर हो गए। वो दौर पिछली सदी का था। तब किसी कंपनी में आप समर्पण, मेहनत और ईमानदारी से काम करते थे तो आपको नौकरी खोने का इतना डर नहीं होता था। लेकिन अब बहुत कुछ बदल चुका है। कंपनियां जब ले ऑफ करती हैं तो कोई भी उसकी चपेट में आ सकता है। एंप्लॉई भी जहां ज्यादा सैलरी या अच्छा पैकेज देखता है, वहीं चला जाता है। दिनों-दिन बढ़ती कॉस्ट ऑफ लिविंग, शिक्षा और चिकित्सा पर बढ़ा हुआ खर्च आदि को देखते हुए एक जॉब पर पूरी तरह निर्भर रहना ना तो सुरक्षित है, ना बुद्धिमानी। आय के एक से ज्यादा स्रोत रखना और अपनी मल्टीपल प्रोफेशनल आइडेंटिटी रखना आज के वक्त की जरूरत है। इसलिए आपको भी पोर्टफोलियो करियर माइंडसेट के बारे में सोचना चाहिए।

पोर्टफोलियो करियर क्या है: पोर्टफोलियो करियर यानी एक व्यक्ति द्वारा अपनी स्किल्स का प्रयोग करते हुए आय के कई स्रोतों की व्यवस्था करना। इसके अंतर्गत एक फुल टाइम जॉब के साथ-साथ या फिर बिना फुल टाइम जॉब के अलग-अलग कई काम किए जाते हैं। पोर्टफोलियो करियर में साइड हसल, एकाधिक पार्ट टाइम जॉब्स, साइड बिजनेस या फ्रीलांसिंग शामिल हैं। उदाहरण के लिए एक नौकरीशुदा ग्राफिक डिजाइनर एक से अधिक व्यवसाइयों के लिए लोगो बना सकता है। एक अकाउंटेंट पूर्णकालिक रूप से एक फर्म में काम कर सकता है, साथ ही अपनी प्राइवेट प्रैक्टिस भी कर सकता है।

पोर्टफोलियो करियर के फायदे: पोर्टफोलियो करियर के कई फायदे होते हैं।

बैलेंस्ड पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफ: पोर्टफोलियो करियर अपनाने वाले लोग अपनी सुविधानुसार टाइम टेबल और अपनी पसंद का काम चुन सकते हैं। इसमें अकसर घर से काम करने की छूट होती है, जिससे विभिन्न गतिविधियों, पारिवारिक जिम्मेदारियों या अन्य कामों के लिए आपको समय मिल जाता है। इससे आपको बेहतर वर्क-लाइफ बैलेंस प्राप्त करने में मदद मिलती है।

एक्स्ट्रा इनकम: पोर्टफोलियो करियर के साथ आप कई सोर्सेज से इनकम प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में अगर आपको अचानक नौकरी से निकाल दिया जाता है, तब भी आपका सोर्स ऑफ इनकम बंद नहीं होगा।

नो बाउंडेशन: पोर्टफोलियो करियर के साथ आपको किसी खास तरह की नौकरी के बंधन में नहीं रहना पड़ता। आप अपनी रुचियों को समय देने और उन्हें पोषित करने वाले किसी करियर को परख और चुन सकते हैं। पोर्टफोलियो करियर आपको किसी भी चीज के लिए प्रतिबद्ध हुए बिना विभिन्न अनुभव प्राप्त करने का अवसर देता है।

पोर्टफोलियो करियर शुरू करें ऐसे: अपना पोर्टफोलियो करियर आप कुछ इस तरह शुरू कर सकते हैं।

प्रॉपर प्लानिंग बनाएं: अगर आप अपना पोर्टफोलियो करियर शुरू करने का फैसला करते हैं तो इसकी प्रॉपर प्लानिंग बनाएं और उस पर अमल करें। आप रेग्युलर करियर के साथ-साथ पोर्टफोलियो करियर भी अपना सकते हैं या फिर सिर्फ पोर्टफोलियो करियर भी अपना सकते हैं।

अपनी स्किल्स को समझें: इसके लिए अपनी क्रिएटिविटी, स्किल्स और इंट्रेस्ट पर विचार करें ताकि आप यह निर्धारित कर सकें कि आप किस तरह के काम से इनकम के लिए इनका उपयोग करना चाहते हैं। इसके बाद ही उस दिशा में अपने कदम बढ़ाएं। इससे सफल होने के चांसेज काफी बढ़ जाएंगे।

लोगों के साथ नेटवर्क बनाएं: अपने पोर्टफोलियो करियर को विकसित करने के लिए आप अपने पुराने सहकर्मियों, सहपाठियों, दोस्तों और ग्राहकों के साथ फिर से जुड़ें। उन्हें अपने काम के बारे में बताएं। संभव है कि वे आपके लिए उपयुक्त अवसरों के बारे में बता सकें। वे आपको सलाह, संपर्क, सहायता या यहां तक कि काम भी दे सकते हैं। *

भारत की प्राचीनतम नदियों में से एक गंगा को भारतीय संस्कृति में पूज्य एवं जीवनदायिनी माना जाता है। इसका केवल धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व भी बहुत अधिक है। भारतभूमि की जीवनधारा गंगा के प्रवाह और महत्ता पर एक दृष्टि।

सभ्यता-संस्कृति की वाहक
पुण्यसलिला-जीवनदायिनी गंगा

नदी गाथा
वीना गौतम

नदियों के किनारे ही संसार की सभी सभ्यताएं, संस्कृतियां विकसित हुई हैं, फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति लोगों की उदासीनता के कारण धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब तो नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ी को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती में इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फूलती-फलती रहे।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति की पहचान: गंगा भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी ही नहीं है। यह भारतीयता की पहचान और देश की जीवनरेखा भी मानी जाती है। भारतीय जनमानस में इस नदी के प्रति असीम श्रद्धा है। यह न केवल हमें जल प्रदान करती है बल्कि आस्था, सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव की भी वाहक है। देश की सबसे महत्वपूर्ण और पूज्यनीय नदी गंगा को भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवनरेखा माना जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि गंगा में सिर्फ पानी नहीं, एक समूची सभ्यता प्रवाहमान है।

गंगा नदी का प्रवाह तंत्र: गंगा नदी की उत्पत्ति हिमालय के गोमुख हिम नदी से होती है, जहां इसे भागीरथी कहा जाता है। प्रवाह के क्रम में अलकनंदा, जब इस भागीरथी में आ मिलती है, तो उसके बाद से इन दोनों नदियों का संगम गंगा कहलाने लगता है। गंगा भारत की सबसे लंबी नदी है। इसकी लंबाई 2525 किलोमीटर है। गंगा के बेसिन में भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 26 प्रतिशत से ज्यादा भाग आता है। गंगा जिन अपनी सहायक नदियों के चलते देश की सबसे महान नदी बनती है, उन सहायक नदियों में यमुना, घाघरा, गंडक, कोसी और सोन नदी प्रमुख हैं। गंगा उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और

पश्चिम बंगाल से होकर बहती है तथा अंत में बांग्लादेश में प्रवेश कर पद्मा के रूप में बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है।

बसे हैं कई तीर्थस्थल: गंगा नदी देश के अनेक महत्वपूर्ण शहरों से होकर बहती है। साथ ही यह देश के कई पवित्र तीर्थस्थलों की पुण्य सलिला भी है। गंगा नदी के किनारे ही हरिद्वार, ऋषिकेश, वाराणसी, प्रयागराज और गंगा सागर जैसे पवित्र तीर्थस्थल हैं, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय सभ्यता के आधार हैं।

एक जीवंत भौगोलिक संसाधन: भौगोलिक दृष्टि से गंगा बहुत ही महत्वपूर्ण नदी है। गंगा घाटी का क्षेत्र भारत की सबसे उपजाऊ कृषि भूमि के अंतर्गत आता है। इस क्षेत्र में गंगा के जल से सिंचाई, जल परिवहन और पेय जल की लगभग समूची व्यवस्था बनती है, जो इसे एक जीवंत भौगोलिक संसाधन के रूप में बदलती है। गंगा घाटी क्षेत्र में बसने वालों के लिए गंगा सिर्फ एक नदी नहीं बल्कि जीवनधारा है।

धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व: हिंदू धर्म में गंगा को केवल नदी या जलधारा नहीं माना जाता, बल्कि इसे माता, देवी और मोक्षदायिनी का दर्जा प्राप्त है। गंगा के जल को अमृत के तुल्य माना जाता है। इसलिए भारत के हर धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान में गंगा जल का इस्तेमाल होता है। यही नहीं, मोक्ष की कामना रखने वाले हर धार्मिक हिंदू की यह ख्वाहिश होती है कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसके मुंह में गंगा जल की कुछ बूंदें डाली जाएं और उसकी चिता की राख को गंगा नदी में प्रवाहित किया जाए। आरंभ से लेकर आज तक गंगा भारतीय मानस में आस्था एवं श्रद्धा के रूप में प्रवाहित हो रही है। गंगा का उल्लेख वैदिक ग्रंथों से लेकर भारतीय साहित्य, कला, संगीत और लोककथाओं में व्यापक रूप से मिलता है। गंगा का उल्लेख हमारे राष्ट्रगान में भी मिलता है।

गंगा का आर्थिक महत्व: भारत का लगभग 40 फीसदी हिस्सा गंगा के बेसिन क्षेत्र में बसता है और यह क्षेत्र देश के कृषि, उद्योग और व्यापार की दृष्टि से सबसे समृद्ध है। गंगा का जल उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल तथा झारखंड के एक बड़े हिस्से में सिंचाई का सबसे बड़ा स्रोत है। गंगा, यमुना के दोआब की भूमि गेहूं, गन्ना और दलहन की खेती के लिए मशहूर है। हरित क्रांति की सबसे बड़ी प्रयोग भूमि यही गंगा का मैदान था।

गंगा के किनारे कोलकाता, कानपुर, भागलपुर, वाराणसी और पटना जैसे देश के कई औद्योगिक नगर बसे हैं। चमड़ा, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, बिजली संयंत्र, कागज उद्योग जैसे कई औद्योगिक संयंत्र स्थापित हैं। हाल के दशकों में राष्ट्रीय जलमार्ग-1 परियोजना के तहत हल्दिया से वाराणसी तक जल परिवहन को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे गंगा सस्ते और एक पर्यावरण अनुकूल जल परिवहन का भी आधार बन गई है।

चुनौतियां हैं कई: गंगा के समक्ष आज अनेक चुनौतियां भी हैं, जिन्हें दूर किया जाना आवश्यक है। दरअसल, गंगा के जल पर दुनिया में सबसे ज्यादा जनसांख्यिकी दबाव है। जितने लोग गंगा नदी पर आश्रित हैं, उतने लोग दुनिया में किसी और नदी पर अपने जीवनयापन और सभी तरह की पहचान के लिए आश्रित नहीं हैं। इसलिए गंगा पर अतिरिक्त जन दबाव, औद्योगिक प्रदूषण, अपशिष्ट जल के साथ-साथ धार्मिक कर्मकांडों एवं प्रदूषण की भी मार है। गंगा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। नमामि गंगे मिशन जैसी योजना चलाई जा रही है। अनेक जलशुद्धि सयंत्रों की स्थापना की गई है। *

हिंदी फिल्में नायक, नायिका और खलनायकों के बॉलीवुड में अपने पैर जमाने में मदद करती रही हैं, एक बड़ी पहचान दी है। इसके साथ इनके पैरों का फिल्मों में बहुत ही करिश्माई अंदाज में फिल्मांकन हुआ, जिसने सस्पेंस, रोमांच, एक्शन, रोमांस क्रिएट करके फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने में इंपॉर्टेंट रोल अदा किया है। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

पर्दे पर पैरों का करिश्मा

सिने ट्रेंड
हेमंत पाल

हिंदी सिनेमा की शुरुआत से लेकर आज तक कई सितारों ने अपनी काबिलियत के दम पर फिल्म इंडस्ट्री में अपने पैर जमाए। कई बार तो नायक-नायिकाओं के पैरों के फिल्मांकन ने फिल्म इंडस्ट्री में उनके पैर जमाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

फिल्म में हीरो से पहले उसके पैरों की एंट्री: फिल्म 'फूल और पत्थर' में नायक धर्मेंद्र की एंट्री छोटे-छोटे पैरों से सड़क पर चढ़ते हुए और बड़े पैरों से सड़क से उतरते हुए थी, जिसे बहुत पसंद किया गया। इसके बाद तो कई फिल्मों में पैरों का शॉट दिखाकर नायक को बच्चे से बड़ा दिखाने के प्रयोग किए गए।

पैरों ने क्रिएट किया सस्पेंस-एक्शन: देव आनंद की 'ज्वेल थीफ' में भी पांव को लेकर सस्पेंस दिखाया गया। नायिका कहती है कि नायक के पैरों में छह अंगुलियां हैं, वह पैर दिखाए। लेकिन वह टालमटोल करता है, जिससे सस्पेंस बढ़ता जाता है। बाद में नायक जिस अंदाज से मौजे उतारता है, वह दृश्य देखने लायक होता है। फिल्म 'शोले' में हाथ कटे ठाकुर (संजीव कुमार) की असमर्थता तब शौर्य में बदल जाती है, जब फिल्म के क्लाइमेक्स में वह अपने पैरों में पहने कील लगे जूतों से गब्बर सिंह (अमजद खान) को मारता है। ठाकुर के पैर की हर ठोकर पर सिनेमा हॉल तालियों और सीटियों से गूंज उठता। 'शोले' में ही गब्बर सिंह को भी चट्टान पर बेल्ट लेकर घूमते दिखाया गया, तब कैमरा उसके पैरों पर ही फोकस होता है।

'शोले' में अमजद खान के साथ संजीव कुमार

'उपकार' में मलंग के किरदार में प्राण

शम्मी कपूर की फिल्म 'चायना टाउन' में नायक के हमशक्ल के पैरों का आकार छोटा होने से कहानी में मोड़ आता है, तो सलीम जावेद ने 'यादों की बारात' में एक नया प्रयोग किया। इसमें खलनायक अजीत के दोनों पैरों के आकार में अंतर होता है। वह एक पैर में 9 नंबर और दूसरे पैर में 10 नंबर का जूता पहनता है। फिल्म के क्लाइमेक्स में जब टेबल पर अजीत के दोनों जूते दिखाए जाते हैं, तो फिल्म के नायक धर्मेंद्र उसे पहचान लेते हैं। इसके साथ ही फिल्म का रोमांच चरम सीमा पर पहुंच जाता है।

नायिकाओं के हसीन पैर: हिंदी फिल्मों में नायिका के हसीन पैरों पर भी कई आइकॉनिक दृश्य और गीत फिल्माए गए। फिल्म 'पाकीजा' में मीना कुमारी के पैरों की खूबसूरती ने खूब करिश्मा किया। बिना चेहरा देखे, रेल की सीट पर मीना कुमारी के पैर देखकर राजकुमार एक चिट्ठी छोड़ जाते हैं, जिस पर लिखा होता है 'आपके पांव देखे, बहुत हसीन हैं, इन्हें जमीन पर मत उतारिएगा, मैले हो जाएंगे।'

याद कीजिए फिल्म 'शोले' का वो डायलॉग जिसमें गब्बर सिंह बसंती से कहता है 'जब तक तेरे पैर चलेंगे, उसकी सांस चलेगी। जब तेरे पैर रुके, तो ये बंदूक चलेगी।'

फिल्म 'मिस मेरी' में बचपन में बिछड़ी नायिका के पैरों की छह अंगुलियां, उसे अपने परिवार से मिलाती है तो 'नाचे मयूरी' में सुधा चंद्रन के नकली पैरों से नर्तकी बनने की कहानी कही गई।

जब नायिकाओं के पैरों की बात आती है, तो जाहिर है वह सुंदर तो होंगे ही। 'मेरे पांव में मेहंदी लगी है', 'आजकल पांव जमीं पर नहीं पड़ते मेरे', 'पांव छू लेने दो फूलों को इनायत होगी', जैसे कितने ही मधुर और सदाबहार गीत नायिका के पैर को ध्यान में रखकर रचे गए।

पैरों से उभारी गई संवेदना: कई फिल्मों में नायक के पैरों को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया गया, जिससे रोमांच के साथ-साथ संवेदना भी जगती है। मिसाल के तौर पर राजश्री प्रोडक्शन की फिल्म 'दोस्ती' को देखा जा सकता है। एक पैर से दिव्यांग और आंख की रोशनी खो चुके व्यक्ति की दोस्ती पर आधारित इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर लंबी दौड़ लगाते हुए उस समय की कई फिल्मों को पीछे छोड़ दिया था। फिल्मों में गरीबी और मजबूरी दिखाने के लिए भी निर्माताओं ने कभी नायक को, कभी नायिका को तो कभी सहनायिका या सहनायक को पैरों से दिव्यांग बनाने का फार्मूला आजमाया। 'उपकार' का मलंग, 'हीर रांझा' का एक पैर से अशक्त मामा, 'सच्चा झूठा' और 'मजबूर' की पैरों से दिव्यांग बहन ने दर्शकों को भावुक कर दिया। इसी तरह फिल्म 'शान' में चलने में अक्षम अब्दुल (मजहर खान) का मुखबिर का किरदार भी काफी लोकप्रिय हुआ था। *

राजकुमार के पैर और सफेद जूते

याद कीजिए फिल्मों के वे सीन, जिनमें पर्दे पर हीरो से पहले उसके सफेद जूते दिखाए जाते थे और दर्शक जान जाते थे कि अब सीन में किसकी एंट्री होने वाली है। 'हमराज' और 'वक्त' में राजकुमार की जानदार एंट्री तो आपको याद ही होगी। इन फिल्मों में जैसे ही परदे पर राजकुमार के सफेद जूते दिखाई देते, दर्शक तालियों से उनका स्वागत करते। राजकुमार खुद इस तथ्य से वाकिफ थे, वे अकसर बी.आर. चोपड़ा से मजाक में कहा करते थे, 'जानी, सुना है आजकल आप हमारे जूतों की कमाई खा रहे हैं।'